डाइट नगरी, जिला धमतरी छ.ग. –एक परिचय

जिले का निर्माण :–06 जुलाई 1998

क्षेत्रफलः– 4081,93 वर्ग कि.मी.

कृषि भूमि – 1,34,017 हेक्टेयर

सिंचित भूमि –9589 हेक्टेयर

डाइट नगरी जिला धमतरी छ.ग. की स्थापना पहले नार्मल स्कूल के रूप में सन् 1961 में हुयी थी। आदिवासी अंचल में स्थित इस संस्था को बीच में 1963–64 में भोपालपट्टनम भी स्थानांतरित किया गया था। कालांतर में यह संस्था पुनः नगरी में संचालित हुयी। सन् 2005 में यह संस्था डाइट के रूप में उन्नत हुयी ।

स्थिति :–

सप्तर्षियों की तपो भूमि एवं दण्डकारण्य का प्रवेश द्वार कहे जाने वाले धमतरी जिले के आदिवासी विकासखण्ड नगरी में यह डाइट स्थित है। धमतरी से उड़ीसा जाने वाले मार्ग में जिला मुख्यालय से 64 कि. मी. तथा राजधानी से 142 कि. मी. दूर में यह डाइट स्थित है।

भौगोलिक स्थिति :–

वनांचल से आच्छादित यह अंचल भौगोलिक दृष्टि से सम्पन्न है। महेन्द्र गिरि पर्वत से निकलने वाली पवित्र चित्रोत्पला गंगा (महानदी) न केवल धमतरी जिले को समृद्ध बनाती है अपितु यह कांकेर जिले को समृद्ध करती हुयी बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है।

दुधावा ,सोंढूर ,माड़म सिल्ली ,रविशंकर जलाशय के पवित्र जल से सराबोर यह जिला अपने भाग्य पर इतराता है। डाइट को गर्व है कि ऐसा भौगोलिक वातावरण बिरले को ही मिल पाता है ।

नगरी विकास खण्ड में चारों ओर वन हैं। इसमें आदिवासी संस्कृति पलती हैं । दूरस्थ अंचल में स्थित कुछ विद्यालय ऐसे भी हैं जहॉ सहज रूप से जा पाना कठिन कार्य है। रविशंकर जलाशय के डूबान क्षेत्र में कुछ ऐसे गांव हैं जहॉ आम लोगों का पहुॅच पाना कठिन कार्य है। एक तरह से भौगोलिक विविधताओं से भरा यह क्षेत्र अपने आप में अद्भुत है।

धार्मिक / पौराणिक स्थिति :–

डाइट नगरी अपने अपने कर्म क्षेत्र में कई पौराणिक कथाओं को भी अपने में समेटा हुआ है। महेन्द्र गिरि पर्वत, जहॉ से महानदी की उत्पत्ति हुयी है को श्रृंगी ऋषि की तपोस्थली मानी गयी है। राम कथा में राजा दशरथ के यहॉ जाकर पुत्रेष्ठि यज्ञ कराने का उल्लेख भी पुराणों में मिलता है । श्रंगी ऋषि की धर्मपत्नी ' शांता ' के नाम पर शांता गुफा आज भी विद्यमान है।

महाभारत में कालयवन बध का वर्णन मिलता है । कथा में इस बात का वर्णन है कि कालयवन का वध मुचकुन्द ऋषि ने किया था। सोंढूर बांध के पास मेचका पहाड़ के आसपास की मिट्टी इस कथा की याद दिलाती है। जन श्रुति है कि राजा मुचकुन्द ही कालांतर में ऋषि मुचकुन्द हुये।

सात ऋषियों की भूमि होने के कारण यह क्षेत्र लोगों के आकर्षण का केन्द्र बिन्दु है। इन ऋषियों में श्रृंगी ,लोमश , कुंभज , अंगिरा ,मुचकुन्द , कर्क , गौतम ऋषि के नाम जग प्रसिद्ध हैं।

रामायण कालीन संस्कृति से सम्बद्ध होने का दावा करते हैं इस अंचल के गांवों के नाम गिधावा , गिद्ध + आवा , रतावा , रथ + आवा । कुछ ऐसे नाम हैं जो क्रमशः जटायु तथा रावण के रथ की कथा का एहसास कराते हैं।

धार्मिक दृष्टि से जिले का नाम धरमतराई से धमतरी हुआ। धमतरी में स्थित ' बिलाईमाता ' की प्रसिद्धि दूर – दूर तक फेली है। रविशंकर बांध से लगा हुआ अंगारमोती का मंदिर भी धार्मिक एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व पूर्ण स्थान रखता है।

ऐतिहासिक स्थिति :–

धमतरी जिला ऐतिहासिक दृष्टि से सम्पन्न है। धमतरी के आसपास तथा सिहावा अंचल में ऐतिहासिक प्रमाणों के अवशेष अभी भी पर्याप्त मात्रा में विद्यमान हैं।सिहावा का कर्णेश्वर मंदिर राजा कर्णराज के यशोगान को जन –जन तक प्रचारित किया है। उनके द्वारा पॉच मंदिरों के निर्माण का उल्लेख मिलता है जो आसपास में विद्यमान है। मेचका पर्वत में अभी भी प्राचीन किला के अवशेष दिखाई पड़ते हैं।

राजनीतिक स्थिति :–

राजनीतिक दृष्टि से यह क्षेत्र महात्मा गांधी का पथ गामी रहा है। ऐतिहासिक ग्राम कण्डेल में बाबू छोटे लाल श्रीवास्तव के द्वारा चलाये गये नहर आंदोलन की चर्चा सुनकर महात्मा गांधी इस अंचल में पधारे थे।

आदिवासी विकास खण्ड नगरी में स्थित ग्राम गट्टासिल्ली मद्य निषेध आंदोलन के कारण आजादी के पूर्व ही चर्चा में रहा है । जिले में आज भी ऐसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी जीवित हैं जिनके मुॅह से आजादी की कथा को सुनकर तन में एक जोश भर आता है। धमतरी में स्थित आदर्श शासकीय शोभाराम देवांगन स्कूलों में स्थित स्तंभ में इन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के नामों को देखा जा सकता है ।

सामाजिक स्थिति :–

सामाजिक दृष्टि से नगरी विकासखण्ड आदिवासी संस्कृति से सम्पन्न है पर दूसरे विकासखण्ड में भी इसकी झलकियॉ दिखायी पड़ती है। शेष तीन विकासखण्ड में मिश्रित समाज के लोग रहने के कारण सामाजिक की जो तस्वीर उभरती है वह मिली जुली है। नगरी विकासखण्ड में रहने वाले कमार जन जाति के लोग आज भी अपने बेहतर अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। शासन की ओर से भी इनके अस्तित्व रक्षा के लिये बार – बार प्रयास किये जा रहे हैं पर इनकी मान्यताओं और रूढ़िवादी विचारों के चलते इनका जीवन स्तर उंचा नहीं हो पा रहा है।

औद्योगिक स्थिति :–

धमतरी जिला वैसे चांवल उद्योग के लिये प्रसिद्ध है। जिले के दो विकास खण्ड धमतरी एवं कुरूद में चांवल मिल की संख्या पर्याप्त है। वनोपज से सम्बन्धित लाख का कारखाना भी धमतरी में स्थित है । नगरी विकासखण्ड में वनोपज से निकलने वाले वस्तुओं का संग्रहण कर वन विभाग के द्वारा परिशुद्ध किया जा रहा है । इस तरह से वन आधारित वस्तुओं के आधार पर उद्योग धंधों में बढ़ोतरी हो रही है।

DISTRCT PROFILE

DISTRICT PROFILE

S. No.	Particulars	Specification
1	Name of the District	Dhamtari
2	District Origin	06-Jul-1998
3	Area	4081.93 Sq. Km.
4	Population(Census 2011)	799194
5	Agricultural Land	134017 hectare
6	Irrigated Land	9589 hectare

7	Blocks	4
8	Tehsils	4
9	Revenue Village	644
10	Forest Village	104
11	Habitation	969
12	Gram Panchayat	333
13	Municipal Council	1
14	Municipal Panchayat	5

POPULATION (CENSUS :2001)

S.No.	BLOCK	MALE	FEMALE	TOTAL
1	Dhamtari	124925	124855	249780
2	Kurud	104732	104952	209684
3	Magarlod	43170	43283	86453
4	Nagari	79697	80977	160674
TOTAL		**352524**	**354067**	**706591**

Source: - Census 2001.

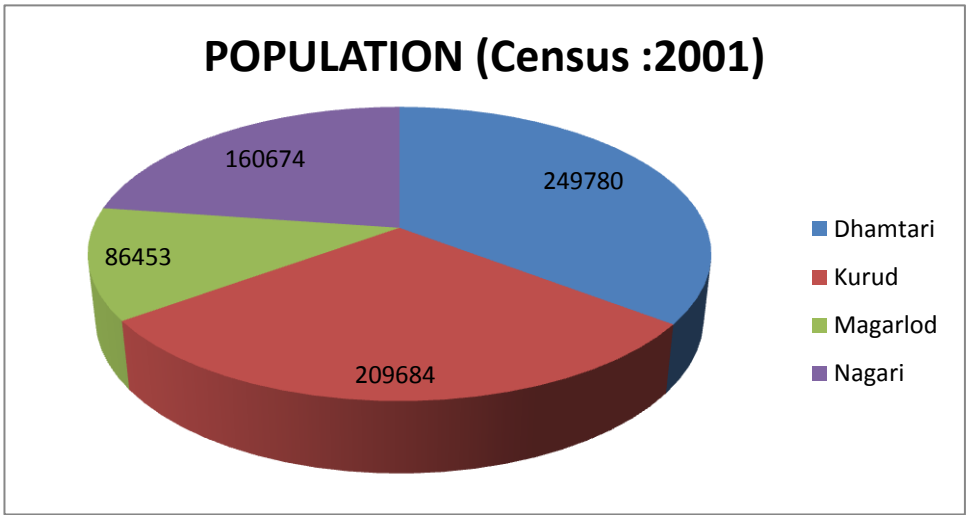

POPULATION (CENSUS : 2011)

S.No.	BLOCK	MALE	FEMALE	TOTAL
1	Dhamtari	139349	140410	279759
2	Kurud	109256	109657	218913
3	Magarlod	60349	61005	121354
4	Nagari	88291	90877	179168
TOTAL		397245	401949	799194

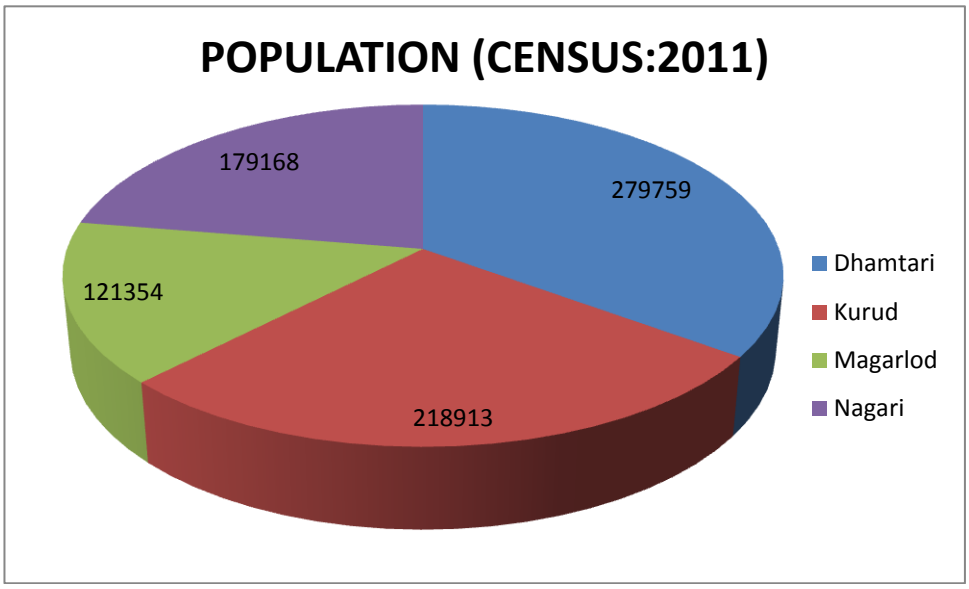

CATEGORY WISE POPULATION(CENSUS: 2001)

S.No.	CATEGORY	MALE	FEMALE	TOTAL
1	SC	24438	24956	49394
2	ST	91748	93767	185515
3	OBC	177378	177790	355168
4	General	58960	57554	116514
TOTAL		**352524**	**354067**	**706591**

Source: - Census 2001.

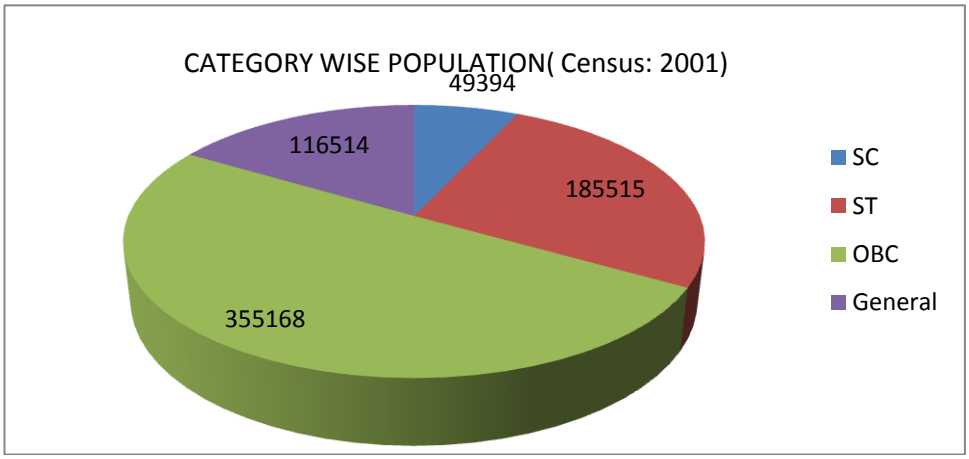

LITERACY Census 2001

S.No.	BLOCK	MALE	FEMALE	TOTAL
1	Dhamtari	31902	53684	85586
2	Kurud	29216	47573	76789
3	Magarlod	13076	22093	35169
4	Nagari	24367	42759	67126
TOTAL		**98561**	**166109**	**264670**

(Source: - Census 2001)

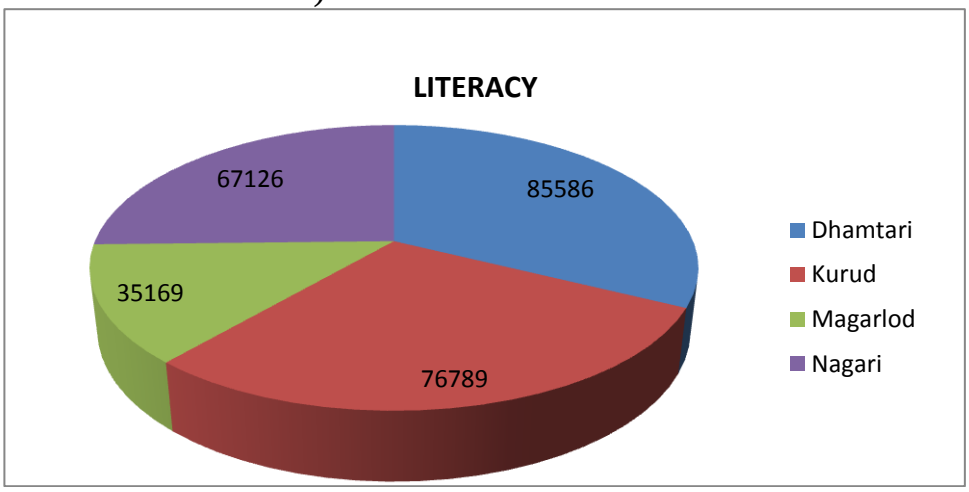

LITERACY Census 2011

S.No.	BLOCK	MALE	FEMALE	TOTAL
1	Dhamtari	90966	111689	202657
2	Kurud	67057	84435	151492
3	Magarlod	37297	48077	85374
4	Nagari	48713	63177	111890
TOTAL		244033	307378	551413

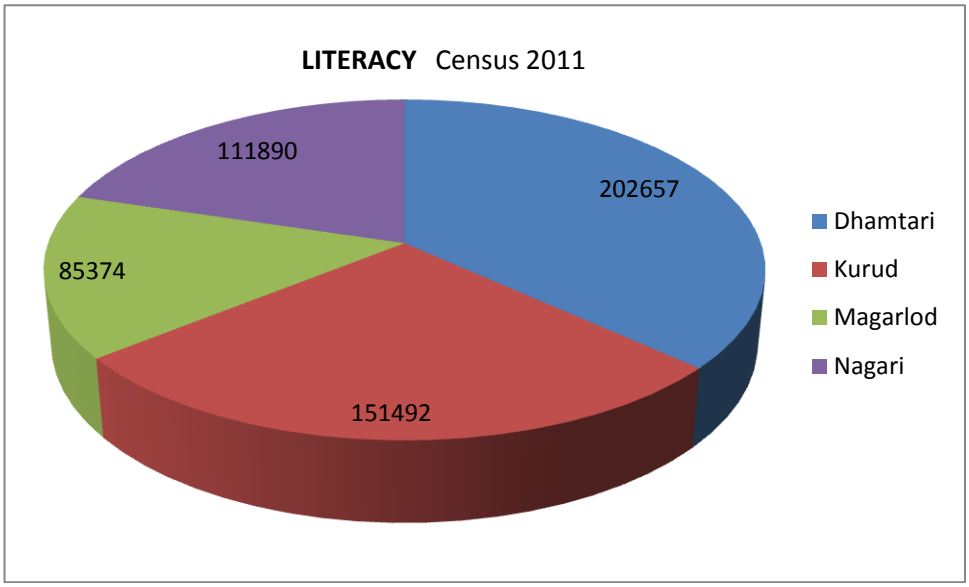

Lok Sabha **: -** 01. Mahasamund
02. Kanker

Vidhan Sabha :- 01. Dhamtari
02. Kurud
03. Sihawa

Municiple Council 01 Dhamtari

Municiple Panchayat 01 Aamdi
02 Bhakhara
03 Kurud
04 Magarlod
05 Nagri

VILLAGES INFORMATION :-

S.No.	Particulars	Dhamtari	Kurud	Magarlod	Nagri	Total
1	Villages	162	133	109	240	644
2	Habitation	242	201	159	367	969
3	Grampanchayat	86	99	62	86	333
4	Municipal Council /	2	2	1	1	6

	Panchayat					

शैक्षणिक परिदृश्य :–

क्र.	विवरण	धमतरी	कुरूद	मगरलोड	नगरी	योग
01	संकुल	19	23	12	27	81
02	शा. प्राथ. शाला	226	188	145	334	893
03	शा.अनुदान प्राप्त प्राथ. शाला	05	0	0	0	5
04	शा. उ.प्राथ. शाला	138	109	70	127	444
05	शा.अनु. प्राप्त उ. प्राथ. शाला	04	0	0	0	4
06	कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय	0	0	1	1	2
07	सहेली शाला	0	0	11	11	22
08	आश्रम शाला	1	0	0	6	7
09	डारमेट्री आश्रम शाला	0	0	0	1	1
10	टेनिंग सेंटर	0	0	0	1	1

शैक्षणिक संस्थाओं का विवरण विभाग वार

क्र.	विवरण	शिक्षा विभाग	आ. जा. क. विभाग	अर्द्ध शास.	शास. अनुदान प्राप्त	सर्व शिक्षा अभियान	योग
01	संकुल	0	0	0	0	81	81
02	पूर्व प्राथ. शाला	817	0	0	0	0	817
03	शा. प्राथ. शाला	356	365	0	5	198	924
04	आश्रम शाला	0	7	0	0	0	7
05	शा. उ. प्राथ. शाला	95	135	0	6	221	457
06	कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय	0	0	0	0	2	2

07	सहेली शाला	0	0	0	0	22	22
08	डारमेटीआश्रम शाला	0	0	0	0	1	1
09	निःशक्त बच्चों की शाला	01	0	0	0	0	1
10	टेनिंग सेंटर	01	0	0	0	0	01

जिले में शैक्षणिक संस्थान्

क्र.	विद्यालय का प्रकार	शासकीय	अशासकीय	अर्द्धशासकीय
01	स्नातकोतर महाविद्यालय	2	0	0
02	महाविद्यालय	3	0	3
03	पलिटेक्निक कालेज	1	0	0
04	टेनिंग सेंन्टर डाइट	1	0	0
05	हायर सेकेण्डरी	66	3	23
06	हाईस्कूल	81	0	60
07	उच्च प्राथ.	450	6	68
08	प्राथमिक	919	5	105
09	आश्रम शाला	7	0	0
10	हेड स्टाट सेंटर	11	0	0
11	सेल्फ लर्निंग सेंटर टच स्क्रीन	9	0	0
12	कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय	2	0	0
13	डारमेटी आश्रम शाला	1	0	0
14	सहेली शाला	22	0	0
15	पूर्व प्राथमिक /आंगनबाड़ी केन्द्र	817	0	0

बच्चों से संबंधित जानकारी प्राथमिक स्तर

क्र.	विकासखण्ड	06 से 11 आयु समूह	नामांकन प्राथमिक स्तर			
			बालक	बालिका	योग	सकल नामांकन दर
01	धमतरी	28530	14330	14190	28520	99.96
02	कुरूद	27722	13704	13931	27635	99.67
03	मगरलोड	15002	7255	7728	14983	99.87
04	नगरी	19442	9813	9599	19412	99.85
योग		90696	45102	45448	90550	99.84

उ. प्राथमिक स्तर :–

क्र.	विकासखण्ड	11 से 14 आयु समूह	नामांकन उच्च प्राथमिक स्तर			
			बालक	बालिका	योग	सकल नामांकन दर
01	धमतरी	15935	7942	7988	15930	99.97
02	कुरूद	14076	6961	7023	13984	99.35
03	मगरलोड	6668	3337	3310	6647	99.69
04	नगरी	9814	5031	4551	9582	97.64
योग		46493	23271	22872	46143	99.16

विकासखण्ड वार शिक्षक तथा बच्चों की जानकारी :–प्राथमिक विभाग

विकासखण्ड	संकुल	प्राथ. शाला की संख्या	छात्रों की संख्या	शिक्षकों की संख्या
नगरी	27	361	16659	879
धमतरी	23	235	19976	865
कुरूद	19	190	19866	873
मगरलोड	12	155	11605	592
योग	**81**	**941**	**68106**	**3209**

विकासखण्ड वार शिक्षक तथा बच्चों की जानकारी :–उच्च प्राथमिक विभाग

विकासखण्ड	संकुल	माध्य.शाला की संख्या	छात्रों की संख्या	शिक्षकों की संख्या
नगरी	27	132	10501	542
धमतरी	23	144	19835	648
कुरूद	19	112	15139	448
मगरलोड	12	73	8012	271
योग	**81**	**461**	**53487**	**1909**

विकासखण्ड वार शिक्षक तथा बच्चों की जानकारी :– हाई स्कूल

विकासखण्ड	संकुल एस. एस.ए.	हाई.की संख्या	छात्रों की संख्या	शिक्षकों की संख्या
नगरी	27	21	6268	76
धमतरी	23	26	6448	112
कुरूद	19	21	2751	124
मगरलोड	12	10	4199	46
योग	**81**	**78**	**19666**	**358**

विकासखण्ड वार शिक्षक तथा बच्चों की जानकारी :– हायर सेकेण्डरी स्कूल

विकासखण्ड	संकुल एस. एस.ए.	हाय.से.की संख्या	छात्रों की संख्या	शिक्षकों की संख्या
नगरी	27	13	1417	114
धमतरी	23	18	24819	152
कुरूद	19	23	7746	271
मगरलोड	12	16	2264	149
योग	**81**	**70**	**36246**	**686**

डाइट नगरी का विजन

- शिक्षको में सकारात्मक सोच विकसित करना।
- शिक्षको में व्यावसायिक क्षमता का विकास करना।
- जनसमुदाय की सहभागिता सुनिश्चित करना।
- शिक्षण को आनंददायी एवं रूचिकर बनाना।
- शिक्षकों की सकारात्मक सोच एवं जन समुदाय के सहयोग से जिले के बच्चो के लिए संतोषजनक (मानक) स्तर की शैक्षिक गुणवत्ता सुनिश्चित करना।

डाइट नगरी में कार्यरत कर्मचारियों की सूची :–

क्र.	नाम	पद	योग्यता	संस्था में कब से पदस्थ हैं
01	श्री व्ही. पी. चन्द्रा	वरिष्ठ व्याख्याता	एम. ए. ,बी. एड. एम. फिल्	12–8–95
02	श्री के.एस.ध्रुव	व्याख्याता	एम. ए. बी.एड.	
03	बी. एम. गजेन्द्र	प्रति.व्या.	एम.एम.एम.एड.	18–07–08
04	श्री ए. के.साहू	विज्ञान सहा शिक्षक	बी. एस. सी. एम.ए. , बी.टी. आई.	13–06–2000
05	श्री सी. डी. वैष्णव	संगीत शिक्षक	बी. ए. आनर्स ,संगीत विशारद	26–11–87
06	श्री विजय साहू	प्रति. व्या.		
07	श्री डी.पी.ताम्रकार	प्रति.व्या.		
08	श्री डी. के.पोटाई	लेखापाल	एम.ए. मु.ले.प्रशि.	07–01–04
09	श्रीमती ईश्वरी ध्रुव	सहा.ग्रेड 02	हायर सेके. मु.ले.प्रशि.,लेखा प्रशि.	31–12–05

10	श्री ए.के. सार्वा	सहा.ग्रेड 02	बी.ए.,मु.ले. प्रशि. ,लेखा प्रशि.	19–10–06
11	श्री पी.के. ध्रुव	सहा.ग्रेड 03	हाईस्कूल	17–02–06
12	श्री एस.एस. रजक	सहा.ग्रेड 03	हायर सेकेण्डरी	21–02–06
13	श्री डी. के. साहू	सहा.ग्रेड 03	हाईस्कूल	18–10–06
14	श्री टी.के. साहू	सहा.ग्रेड 03	हाईस्कूल	04–10–07
15	श्री एस.एस. रजक	सहा.ग्रेड 03	हायर सेकेण्डरी	21–02–06

डाइट के सात प्रकोष्ठ

क्र	प्रकोष्ठ का नाम	प्रभारी का नाम
01	सेवा पूर्व प्रशिक्षण	श्री विजय साहू
02	जिला स्रोत इकाई	श्री के.एस.ध्रुव
03	सेवा कालीन , क्षेत्र अंतःक्रिया एवं पाठ्यक्रम	व्ही. पी. चन्द्रा
04	कार्यानुभव	श्री सी. डी. वैष्णव
05	पाठ्य सामग्री निर्माण एवं मूल्यांकन	श्री व्ही. पी. चन्द्रा
06	शैक्षिक प्रौद्योगिकी	श्री ए. के.साहू
07	योजना एवं प्रबंधन	श्रीमती बी.एम.गजेन्द्र

योजना क्र. 01

श्रेष्ठ पालकत्व :–

शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। एक तरफ (शिक्षक)विद्यालय है तो दूसरी ओर बच्चे हैं और तीसरी ओर पालक हैं । जब तक इन तीनों में बेहतर तालमेल नहीं होगा तब तक बेहतर शिक्षा की कल्पना संभव नहीं है। इन तीनों के बीच बेहतर तालमेल नहीं होने की स्थिति कई तरह की परिस्थितियां उत्पन्न हो रही हैं जिसे अधोलिखित रूप में देखा गया है –

- वर्तमान में शिक्षक (विद्यालय)तथा पालकों के बीच दूरी है।
- तालमेल के अभाव में शिक्षक अपने दायित्व का निर्वहन भली भांति नहीं कर रहे हैं
- विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का सदुपयोग नहीं हो रहा है।
- पालकों में आत्मविश्वास की कमी नजर आती है । उन्हें यह एहसास कराने की जरूरत है कि बच्चों की शिक्षा में वे अहं योगदान दे सकते हैं। उनमें आत्म विश्वास जगाने की जरूरत है
- शिक्षा में पालकों की भागीदारी अनिवार्यतः होनी चाहिए पालकों में इस समझ का अभाव है।
- पालक भी अपने दायित्व का निर्वहन भली भांति नहीं कर रहे हैं ।
- पालक यह समझ बैठें हैं कि बच्चों को शिक्षा देने का काम केवल विद्यालय का है।
- पालकों के प्रति शिक्षकों की सोच भी सकारात्मक नहीं है।
- अभी भी शाला त्यागी और शाला अप्रवेशी बच्चे समाज में मौजूद हैं ।
- पालकों की जागरूकता के अभाव में बेहतर शिक्षा नहीं हो पा रही है।
- बिना पालकों की जागरूकता से बेहतर शिक्षा की कल्पना संभव नहीं है।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर इस योजना का निर्माण किया गया है। योजना के केन्द्र में यह बात है कि ' **यदि पालक श्रेष्ठ होंगे तो बच्चे भी श्रेष्ठ होंगे ।**

उद्देश्य :–

इस योजना के अधोलिखित उद्देश्य हैं:–

- शिक्षक (विद्यालय) बच्चे तथा पालकों के बीच की दूरी कम करना ।

- शिक्षक ,बच्चे तथा पालकों के बीच बेहतर तालमेल बिठाना ।
- शिक्षा के प्रति पालकों में सकारात्मक सोच उत्पन्न करना ।
- पालकों के प्रति शिक्षकों में सकारात्मक सोच विकसित करना ।
- पालकों को उनके बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए तैयार करना ।
- पालकों में उनके दायित्व की समझ विकसित करना ।
- शिक्षा में पालकों की भागीदारी सुनिश्चित करना ।
- पालकों के माध्यम से बच्चों के लिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन सुनिश्चित करना ।
- पालकों की मदद से बेहतर शिक्षा सुनिश्चित करना ।
- श्रेष्ठ पालकत्व का विकास करना ।
- छात्राध्यापकों को वास्तविक परिस्थिति में कार्य करने का अवसर प्रदान ताकि वे बेहतर सीख सकें ।
- शालेय शिक्षण अनुभव में नवाचार करना ।

  छात्राध्यापकों से इस संबंध में खुलकर बातें की गई हैं । इस योजना के क्रियान्वयन को लेकर छात्राध्यापक उत्साहित भी हैं । यदि डाइट को इस योजना के क्रियान्वयन का अवसर प्राप्त होता है तो निश्चित ही इससे परिणाम सकारात्मक आएंगे ।

चयनित संकुल :–

इस योजना का क्रियान्वयन जिले के चारों विकासखण्ड के एक –एक संकुल में किया जाएगा । चयनित संकुल अधोलिखित हैं –

01 संकुल मल्हारी ,विकासखण्ड नगरी

02 संकुल कुरमातराई ,विकासखण्ड धमतरी

03 संकुल भेण्डरी ,विकासखण्ड मगरलोड

04 संकुल जीजामगांव ,विकासखण्ड कुरूद

संकुल मल्हारी :–

संकुल समन्वयक का नाम – श्री रविशंकर साहू
मोबाईल नम्बर –9755781665

क्र.	विद्यालय का नाम	शि.सं.	बच्चों की संख्या	प्रधान पाठकों के नाम एवं दूरभाष
01	प्राथमिक शाला मल्हारी	03	114	एस.एस.प्रधान 9754672299
02	प्राथमिक शाला सिरसिदा	02	112	दिलेश्वरी नवरंग 9575560527
03	प्राथमिक शाला खम्हरिया	03	132	कामेश्वर साहू 9424236919
04	प्राथमिक शाला रानीगांव	03	51	डी.पी.खरे 9977848901
05	प्राथमिक शाला सारंगपुरी	03	41	जीवराज कश्यप 8103553004
06	प्राथमिक शाला अंजनी	03	34	इंदिरा कोसरे 9424237101
07	प्राथमिक शाला रांवनसिंघी	02	19	दिनेश कुमार चेलक8819922564
योग		**19**	**503**	

माध्यमिक शालाओं की संख्या :–

क्र.	विद्यालय का नाम	शि.सं.	बच्चों की संख्या	प्रधान पाठकों के नाम एवं दूरभाष
01	माध्यमिक शाला मल्हारी	04	81	आर.आर.धुर्वे 9009451161
02	माध्यमिक शाला सिरसिदा	05	84	जगत नाग 9770665227
03	माध्यमिक शाला खम्हरिया	05	72	आर.के साहू 8717919965
04	माध्यमिक शाला रानीगांव	05	86	गौतम चंद साहू 7828249134
योग		**19**	**326**	

संकुल में आंगनबाड़ी केन्द्रों के नामः–

क्र.	आंगनबाड़ी केन्द्र का नाम
01	आंगनबाड़ी केन्द्र मल्हारी
02	आंगनबाड़ी केन्द्र सिरसिदा
03	आंगनबाड़ी केन्द्र खम्हरिया
04	आंगनबाड़ी केन्द्र रानीगांव
05	आंगनबाड़ी केन्द्र सारंगपुरी
06	आंगनबाड़ी केन्द्र अंजनी
07	आंगनबाड़ी केन्द्र रांवनसिंघी

संकुल की कुल जनसंख्या :–

क्र.	ग्राम का नाम	जनसंख्या		योग
		पुरूष	महिला	
01	मल्हारी	560	613	1173
02	सिरसिदा	593	591	1184
03	खम्हरिया	681	728	1409
04	रानीगांव	233	255	488
05	सारंगपुरी	212	211	423
06	रांवनसिंघी	209	224	433
07	अंजनी	192	191	383
योग		2680	2813	5493

एस.एम.सी.के सदस्यों की संख्या :–

विद्यालयों की कुल संख्या		योग	एस.एम.सी.के सदस्यों की संख्या
प्राथमिक	माध्यमिक		
07	04	11	176

ग्राम पंचायत की संख्या :–

क्र.	ग्राम पंचायत का नाम	आश्रिम ग्राम के नाम	सरपंच का नाम
01	मल्हारी	रानीगांव ,मल्हारी,अंजनी सारंगपुरी	कासुन्तला चतुर
02	सिरसिदा	रांवनसिंघी	प्रेमलता नागवंशी
03	खम्हरिया	खम्हरिया	सुशीला बाई

आंगनबाड़ी केन्द्रों के नाम :–

01 आंगनबाड़ी केन्द्र मल्हारी
02 आंगनबाड़ी केन्द्र रानीगांव
03 आंगनबाड़ी केन्द्र अंजनी
04 आंगनबाड़ी केन्द्र सारंगपुरी
05 आंगनबाड़ी केन्द्र सिरसिदा
06 आंगनबाड़ी केन्द्र खम्हरिया
07 आंगनबाड़ी केन्द्र रांवनसिंघी

शिक्षा के क्षेत्र में रूचि रखने वाले पालकों के नाम :–

- अभयराम सोन
- विष्णुशरण कौशल
- भुवनेश्वर साहू
- तेजनाथ साहू
- धनउराम साहू

- विमलकांत वैरागी
- श्रीमती अमिता दुबे
- कीर्तन कौशल

संकुल भेण्डरी :–

संकुल समन्वयक का नाम – श्री कंवलराम साहू
मोबाईल नम्बर – 7898005696

क्र.	विद्यालय का नाम	शि. सं.	बच्चों की संख्या	प्रधान पाठकों के नाम एवं दूरभाष
01	प्राथमिक शाला नहरडीह	05	87	संतोष कुमार शर्मा
02	प्राथमिक शाला करेलीबड़ी क	06	77	श्रीमती रत्ना ग्वाल
03	प्राथमिक शाला बुड़ेनी	08	206	पुनाराम साहू
04	प्राथमिक शाला नवागांव	05	153	चमरूराम नेताम
05	प्राथमिक शाला भेण्डरी बा.	05	160	विष्णुराम ध्रुव
06	प्राथमिक शाला भेण्डरी क	07	134	अमरौतिन बघेल
07	प्राथमिक शाला महुवाभांठा	07	160	कोमल सिंह साहू
08	प्राथमिक शाला चांदापारा	06	88	नोहर सिंह ठाकुर
09	प्राथमिक बा. शाला करेलीबड़ी	06	75	खगेश कुमार सिन्हा
10	प्राथमिक शाला अस्पताल पारा करेली ब	08	90	भोलाराम साहू
11	प्राथमिक शाला बनियातोरा करेली बड़ी	03	180	चित्रसेन देवांगन
12	प्राथमिक शाला खट्टी	04	105	देवी प्रसाद साहू
13	प्राथमिक शाला परसट्ठी	05	102	टेमन कुमार चेलक
14	प्राथमिक शाला रामपुर (परसट्ठी)	05	72	रजउराम साहू
15	प्राथमिक शाला चंदना	06	153	तेजेन्द्र कुमार यदु
16	प्राथमिक शाला चंद्रसूर	06	183	षन्मय कुमार ग्वाल
योग		**92**	**2025**	

माध्यमिक शालाओं की संख्या :–

क्र.	विद्यालय का नाम	शि.सं.	बच्चों की संख्या	प्रधान पाठकों के नाम एवं दूरभाष
01	माध्य.बा.शाला भेण्डरी	04	189	यादराम ध्रुव
02	माध्यमिक शाला भेण्डरी क.	04	194	टोपसिंह ध्रुव
03	माध्य. शाला करेलीबड़ी बा	03	161	थानेश्वर कुमार साहू
04	माध्य. शाला क.करेलीबड़ी	03	176	श्रीमती कमलेश्वरी सोनकर
05	माध्य. शाला खट्टी	04	75	बलीराम साहू
06	माध्यमिक शाला परसट्ठी	04	164	कमलनारायण साहू
07	माध्यमिक शाला चंदना	03	85	श्रीमती संध्या बघेल
08	माध्यमिक शाला बुड़ेनी	05	116	श्रीमती कुंती महिलवार

09	माध्यमिक शाला चंद्रसूर	05	121	मयाराम महिलवार
10	माध्यमिक शाला नवागांव बु.	05	99	श्रीमती बिन्दु कुर्रे
योग		40	1383	

संकुल की कुल जनसंख्या :–

क.	ग्राम का नाम	जनसंख्या		योग
		पुरूष	महिला	
01	करेली बड़ी	2400	2740	5140
02	परसट्ठी	439	435	874
03	चंदना	741	699	1440
04	चन्द्रसूर	671	761	1432
05	नवागांव	625	775	1400
06	बुड़ेनी	875	853	1728
07	खट्टी	463	435	898
08	नहरडीह	340	310	650
09	भेण्डरी	2376	2354	4730
योग		8930	9362	18292

एस.एम.सी.के सदस्यों की संख्या :–

विद्यालयों की कुल संख्या		योग	एस.एम.डी.सी.के सदस्यों की संख्या
प्राथमिक	माध्यमिक		
16	10	26	416

ग्राम पंचायत की संख्या :–

क.	ग्राम पंचायत का नाम	आश्रिम ग्राम के नाम	सरपंच का नाम
01	करेली बड़ी		श्रीमती देवकुंवर साहू
02	परसट्ठी		डगेश्वर सोनकर
03	चंदना		श्रीमती सेवती कुर्रे
04	चन्द्रसूर		ईश्वर निषाद
05	बुड़ेनी		भुवनलाल साहू
06	भेण्डरी		मानसमणि देवांगन
07	नवांगांव		बिहारी साहू

आंगनबाड़ी केन्द्रों के नाम :–

क0	आंगनबाड़ी केन्द्र का नाम

01	आंगनबाड़ी केन्द्र नहरडीह
02	आंगनबाड़ी केन्द्र करेलीबड़ी
03	आंगनबाड़ी केन्द्र बुड़ेनी
04	आंगनबाड़ी केन्द्र नवागांव
05	आंगनबाड़ी केन्द्र भेण्डरी बाजार पारा
06	आंगनबाड़ी केन्द्र भांठापारा भेण्डरी
07	आंगनबाड़ी केन्द्र महुवाभांठा
08	आंगनबाड़ी केन्द्र चांदापारा
09	आंगनबाड़ी केन्द्र करेलीबड़ी
10	आंगनबाड़ी केन्द्र अस्पताल पारा करेली ब
11	आंगनबाड़ी केन्द्र बनियातोरा करेली बड़ी
12	आंगनबाड़ी केन्द्र खट्टी
13	आंगनबाड़ी केन्द्र परसट्ठी
14	आंगनबाड़ी केन्द्र रामपुर (परसट्ठी)
15	आंगनबाड़ी केन्द्र चंदना
16	आंगनबाड़ी केन्द्र चंद्रसूर

शिक्षा के क्षेत्र में रूचि रखने वाले पालकों के नाम :–

संकुल कुरमातराई :–

संकुल समन्वयक का नाम – श्री चन्द्रकुमार बंजारे
मोबाईल नम्बर – 9098173564

क्र.	विद्यालय का नाम	शि. सं.	बच्चों की संख्या	प्रधान पाठकों के नाम एवं दूरभाष
01	प्राथमिक शाला कुरमातराई	05	127	ईश्वर राम साहू
02	प्राथमिक शाला खम्हरिया	03	78	गुणवती साहू
03	प्राथमिक शाला जुनवानी	05	115	डूमेन्द्र कुमार साह
04	प्राथमिक शाला डोमा	06	169	द्विजराम कुंभकार
05	प्राथमिक शाला गुजरा	07	241	श्रीमती वनिता नेताम
06	प्राथमिक शाला दरगहन	05	125	रेवाराम विश्वकर्मा
07	प्राथमिक शाला रीवांगहन	05	184	श्रीमती हसीना ध्रुव
योग		**36**	**1039**	
माध्यमिक विभाग				
01	माध्यमिक शाला कुरमातराई	03	93	श्री अंधेरियस खाखा
02	माध्यमिक शाला खम्हरिया	04	50	श्री होरीलाल साहू
03	माध्यमिक शाला जुनवानी	06	68	आशाराम साहू

04	माध्यमिक शाला डोमा	03	146	खिलेश्वरी साहू
05	माध्यमिक शाला गुजरा	05	189	चन्द्रसेन यादव
06	माध्यमिक शाला दरगहन	03	84	राजा राम साहू
07	माध्यमिक शाला रीवांगहन	04	122	गोपाल साहू
योग		28	752	

संकुल के आंगनबाड़ी केन्द्रों के नाम :–

क्र.	आंगनबाड़ी केन्द्रों के नाम
01	आंगनबाड़ी केन्द्र कुरमातराई
02	आंगनबाड़ी केन्द्र खम्हरिया
03	आंगनबाड़ी केन्द्र जुनवानी
04	आंगनबाड़ी केन्द्र डोमा
05	आंगनबाड़ी केन्द्र गुजरा
06	आंगनबाड़ी केन्द्र दरगहन
07	आंगनबाड़ी केन्द्र रीवांगहन

संकुल की कुल जनसंख्या :–

क्र.	ग्राम का नाम	जनसंख्या		योग
		पुरूष	महिला	
01	कुरमातराई	629	606	1235
02	दरगहन	575	592	1167
03	जुनवानी	539	555	1094
04	गुजरा	1021	1120	2141
05	खम्हरिया	448	527	975
06	डोमा	981	964	1945
07	रीवांगहन	639	615	1254
08		4832	4979	9811

एस.एम.सी.के सदस्यों की संख्या :–

विद्यालयों की कुल संख्या		योग	एस.एम.सी.के सदस्यों की संख्या
प्राथमिक	माध्यमिक		
07	07	14	224

ग्राम पंचायत की संख्या :–

क्र.	ग्राम पंचायत का नाम	आश्रिम ग्राम के नाम	सरपंच का नाम

01	कुरमातराई	कुरमातराई	दीपक वैष्णव
02	रीवांगहन	रीवांगहन	गोमती साहू
03	दरगहन	दरगहन	सुदर्शन राम साहू
04	जुनवानी	जुनवानी	अंकलहू राम साहू
05	डोमा	डोमा	राजकुमार साहू
06	गुजरा	गुजरा	शांति बाई मंडावी

संकुल जीजामगांव :–

संकुल समन्वयक का नाम – श्री टेकारे
मोबाईल नम्बर – 9907103149

क्र.	विद्यालय का नाम	शि. सं.	बच्चों की संख्या	प्रधान पाठकों के नाम एवं दूरभाष
01	प्राथ. शाला बा.जीजामगांव	03	86	राजकुमार ध्रुव
02	प्राथ. शाला क.जीजामगांव	04	96	लेखराम टेकारे
03	नवीन प्राथ. शाला जीजामगांव	03	45	शिवेन्द्र सिंह ठाकुर
04	प्राथमिक शाला गणेशपुर	03	132	श्रीमती द्रोपती कोशले
05	प्राथ. शाला सरबदा	04	118	ओमप्रकाश साहू
06	प्राथ. बा.शाला मड़ेली	05	122	श्रीमती विद्या साहू
07	प्राथ.क. शाला मड़ेली	06	132	सूरज बैस
08	नवीन प्राथमिक शाला मड़ेली	03	120	श्रीमती पूर्णिमा साहू
09	प्राथ. शाला कचना	09	279	श्री पंचूराम ध्रुव
10	प्राथ. शाला जरवायडीह	04	110	वंशीलाल देवांगन
11	प्राथ. शाला कानामूका	03	80	बिहारीलाल निषाद
12	प्राथमिक शाला नवागांव	06	169	सेवाराम पॉल
13	नवीन प्राथमिक शाला कचना	04	34	श्री पंचूराम ध्रुव
	योग	**60**	**1489**	

माध्यमिक विभाग

क्र.	विद्यालय का नाम	शि. सं.	बच्चों की संख्या	प्रधान पाठकों के नाम एवं दूरभाष
01	माध्य. बा.शाला जीजामगांव	03	86	साधूराम रिगरी
02	माध्य.क. शाला जीजामगांव	05	122	शेखर ठाकुर
03	माध्यमिक बा.शाला मड़ेली	02	134	सुरेश कुमार बघेल
04	माध्य.क. शाला मड़ेली	03	142	विजय लक्ष्मी शर्मा
05	माध्यमिक शाला कचना	06	394	शत्रुघन लाल साहू

06	माध्यमिक शाला सरबदा	05	129	दीनूदास बघेल
योग		24	1003	

आंगनबाड़ी केन्द्र की संख्या – 20

एस.एम.सी.के सदस्यों की संख्या :–

विद्यालयों की कुल संख्या		योग	एस.एम.डी.सी.के सदस्यों की संख्या
प्राथमिक	माध्यमिक		
13	06	19	304

ग्राम पंचायत की संख्या :–

क्र.	ग्राम पंचायत का नाम	आश्रिम ग्राम के नाम	सरपंच का नाम
01	जीजामगांव		माखनलाल चन्द्राकर
02	सरबदा		श्रीमती नर्मदा साहू
03	मड़ेली		अनिल कुमार साहू
04	जरवायडीह		नवदीप चन्द्राकर
05	कचना		श्रीमती राजकुमारी ध्रुव
06	नवागांव		भगवान दास

शिक्षा में रूचि रखने वाले पालकों के नाम :–

संकुल की कुल जनसंख्या :–

क्र.	ग्राम का नाम	जनसंख्या		योग
		पुरूष	महिला	
01	जीजामगांव	1470	1475	2945
02	गणेशपुर	416	617	1033
03	सरबदा	738	465	1203
04	मड़ेली	2163	2275	4438
05	कचना	1931	2069	4000
06	जरवायडीह	504	442	946
07	कानामूका	291	325	616
08	नवागांव	585	700	1285
योग		8098	8368	16466

श्रेष्ठ पालकत्व योजना के लिए चयनित चारों संकुल से संबंधित संकलित जानकारी अधोलिखित हैः–

आंगन बाड़ी केन्द्र की संख्या	विद्या. की संख्या		बच्चों की संख्या		शिक्षकों की संख्या		गांव की संख्या	ग्राम पंचायत की संख्या	एस.एम. सी.के सदस्यों की कुल संख्या
	प्राथ.	माध्य.	प्राथ.	माध्य.	प्राथ.	माध्य.			
50	42	27	5056	3164	207	111	36	22	1104

चयनित संकुल की कुल जनसंख्या :–

क्र.	संकुल का नाम	महिला	पुरूष	योग
01	मल्हारी	2813	2680	5493
02	कुरमातराई	4979	4832	9811
03	जीजामगांव	8368	8098	16466
04	भेण्डरी	9362	8930	18292
महायोग		25522	24540	50062

क्रियान्वयन :–

श्रेष्ठ पालकत्व योजना का क्रियान्वयन अधोलिखित रूप में किया जाएगा–

01 छात्राध्यापकों का उन्मुखीकरण :–

श्रेष्ठ पालकत्व योजना के बारे में पूरी समझ विकसित करने के लिए छात्राध्यापकों का **02 दिवसीय** उन्मुखीकरण किया जाएगा । इस उन्मुखीकरण में छात्राध्यापकों को योजना की पूरी जानकारी के साथ योजना के क्रियान्वयन में उनकी (छात्राध्यापकों की) भूमिका के बारे में विस्तृत जानकारी दी जाएगी ।

संभावित व्ययः–

प्रतिभागी संख्या	मदवार व्यय				योग
	स्टेशनरी	नास्ता	आकस्मिक व्यय	यात्रा	
80	1625	2600	2500	0	6725

02 बेस लाईन सर्वे :–

यह कार्य योजना के प्रभारी संकाय सदस्य के मार्गदर्शन में डी.एड.के छात्राध्यापकों के माध्यम से किया जाएगा। प्रत्येक संकुल में 20–20 छात्राध्यापकों का सहयोग लिया जाएगा । इस बेस लाईन सर्वे में अधोलिखित बातों का सर्वे किया जाएगा –

- एस.एम.सी.की मासिक बैठक तथा उसका प्रभावी क्रियान्वयन ।
- आर.टी.ई. पर पालकों की समझ तथा प्रतिक्रिया ।
- सी.सी.ई.पर पालकों की समझ तथा प्रतिक्रिया।
- विद्यालय की गतिविधियों में पालकों की भागीदारी ।
- पालकों के बारे में शिक्षकों की प्रतिक्रिया ।
- पूरी शिक्षा प्रक्रिया में पालकों की भागीदारी ।

उपरोक्त बिन्दुओं पर बेस लाईन सर्वे के लिए प्रपत्रों का निर्माण किया जाएगा ।

बेस लाईन सर्वे के तरीके :–

01 शिक्षकों से बातचीत / प्रश्नावली /प्रपत्रों का संधारण
02 पालकों से घर –घर जाकर सम्पर्क / प्रश्नावली /प्रपत्रों का संधारण
03 विद्यालय में उपलब्ध अभिलेखों (एस.एम.सी.बैठक पंजी , पालकों के लिए पृथक से रजिस्टर यदि हो तो , पालकों के द्वारा किए गए कार्यों का अभिलेखीकरण)का अध्ययन करना ।
04 विद्यालय का अवलोकन /कक्षा का अवलोकन ।
05 बच्चों से बातचीत ।

संभावित व्ययः–

प्रति. संख्या	मदवार व्यय				मॉनीटरिंग	
	स्टेशनरी /प्रपत्रों के प्रिटिंग में व्यय	यात्रा व्यय 150/प्रति छात्राध्यापक	मानदेय 150/प्रति दिवस कुल 05 दिन	आक. व्यय		
80	15000	12000	60000	10000	12000	109000

03 आंकड़ों का विश्लेषण तथा उन्मुखीकरण कार्यशाला :–

प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण तथा आगामी रणनीति निर्माण के लिए छात्राध्यापकों के लिए 02 दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा । आंकड़ों का विश्लेषण इन बातों को ध्यान में रखकर किया जाएगा –

- ऐसे कौन से क्षेत्र हैं जिसमें ज्यादा ध्यान देने की जरूरत नहीं है।
- ऐसे कौन से क्षेत्र हैं जिसमें ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।
- आवश्यकता वाले क्षेत्र की पूर्ति के लिए तरीके क्या –क्या होंगे ।
- छात्राध्यापकों के सवालों के आधार पर बातचीत की जाएगी ।
  उपरोक्त विन्दुओं के आधार पर आगे की रणनीति का निर्माण कर छात्राध्यापकों का उन्मुखीकरण किया जाएगा ।

संभावित व्ययः–

प्रतिभागी संख्या	मदवार व्यय				योग
	स्टेशनरी /प्रपत्रों के प्रिटिंग में व्यय	चाय नास्ता	मानदेय	आकस्मिक व्यय	
60	0	2400	0	2000	4400

शिक्षकों के लिए उन्मुखीकरण कार्यशाला :–

संकुल में कार्यरत शिक्षकों का संकुल स्तर पर 02 दिवसीय उन्मुखीकरण कार्यशाला 02 चरण में किया जाएगा । प्रथम चरण में संकुल के आधे शिक्षक तथा द्वितीय चरण में संकुल के आधे शिक्षक इस कार्यशाला में उपस्थित होंगे । इस उन्मुखीकरण कार्यशाला के अधोलिखित उद्देश्य हैं–

- श्रेष्ठ पालकत्व पर शिक्षकों की समझ विकसित करना ।
- श्रेष्ठ पालकत्व के लिए माह वार कार्ययोजना की जानकारी देते हुए रणनीति का निर्माण करना
- लक्ष्य कार्ड की विस्तृत जानकारी देना ।

- शिक्षकों के द्वारा किए जा सकने वाले कार्यो का निर्धारण करना ।
- संकुल के आंकड़ों की जानकारी शिक्षकों को देते हुए उसका विश्लेषण करना ।
- आंकड़ों के आधार पर आगामी कार्ययोजना की जानकारी देकर कार्य पर समझ विकसित करते हुए जवाबदारी तय करना।
- प्राथमिकताओं का निर्धारण कर उस कार्य करने की रणनीति का निर्माण करना ।

प्रतिभागी	मदवार व्यय					योग
संख्या	स्टेशनरी /प्रपत्रों के प्रिटिंग में व्यय	यात्रा व्यय	मानदेय	आ. व्यय	चाय नास्ता एवं भोजन	
60+318+8	7950	4000	4800	4000	46320	62270

एस.एम.सी.के सदस्यों को प्रशिक्षण देने हेतु मास्टर टेनर्स के लिए कार्यशाला :–

एस.एम.सी.के सदस्यों को प्रशिक्षण देने हेतु मास्टर टेनर्स के लिए संकुल स्तर पर ही **02 दिवसीय** कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यशाला में संकुल के प्रधान पाठक तथा संबंधित संकुल में कार्य कर रहे छात्राध्यापक मास्टर टेनर्स होंगे। कार्यशाला में अधोलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की जाएगी –

- एस.एम.सी. का गठन क्यों ?
- निःशुल्क एवं बाल शिक्षा का अधिकार के क्रियान्वयन में एस.एम.सी.की भूमिका ।
- विद्यालय की समस्या की पहचान क्यों और कैसे ?
- समस्या समाधान हेतु प्राथमिकताओं का निर्धारण क्यों और कैसे ?
- सतत् एवं समग्र मूल्यांकन में एस.एम.सी.की भूमिका।
- मासिक बैठक हेतु एजेण्डों का निर्माण क्यों और कैसे ?
- मासिक बैठक में लिए गए निर्णय का क्रियान्वयन।
- पालकों के साथ बातचीत क्यों और कैसे ?

- विद्यालय स्तर पर विविध गतिविधियों का आयोजन क्यों और कैसे ?
- विद्यालय और समाज के बीच एक सेतु के रूप में एस.एम.सी.की भूमिका ।

संभावित व्यय :–

प्रति.	मदवार व्यय					योग
संख्या	स्टे.	यात्रा व्यय	मानदेय 300 प्रति मास्टर टेनर्स कुल मास्टर टेनर्स 06 कुल दिवस 02	आ. व्यय	चाय नास्ता एवं भोजन	
155	3875	3000	3600	3000	18600	32075

एस.एम.सी.सदस्यों के लिए उन्मुखीकरण कार्यशाला :–

श्रेष्ठ पालकत्व कार्य योजना में एस.एम.सी.की महत्वपूर्ण भूमिका को चिह्नांकित किया गया है। यदि एस.एम.सी.के सदस्य श्रेष्ठ पालकत्व की अवधारणा एवं इसके क्रियान्वयन को भली भांति समझ जाएंगे तो वे अपने गांव के पालकों से भी बेहतर चर्चा कर सकेंगे। अतः इस कार्य योजना में एस.एम.सी.के सदस्यों के लिए **02 दिवसीय** उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। ऐसा करने से –

- एस.एम.सी.की विद्यालय में भूमिका को वे समझ सकेंगे।
- एस.एम.सी.से जुड़े हुए लोगों की समझ श्रेष्ठ पालकत्व पर बनेगी।
- वे अपने दोहरे दायित्व को भली भांति समझ सकेंगे।
- गांव के लोगों से वे अवधारणा आधारित बात कर सकेंगे।
- पालकों के प्रश्नों का जवाब दे सकेंगे।
- विद्यालय में सहकारिता आधारित प्रबंधन का विकास होगा।
- श्रेष्ठ पालकत्व की दिशा में प्रबंधन के लोग हमारे सहयोगी के रूप में कार्य करेंगे ।

संभावित व्ययः–

प्रतिभागी	मदवार व्यय					योग
संख्या	स्टेशनरी	यात्रा व्यय	मानदेय	आ. व्यय प्रति विद्या. 500/कुल विद्या. 69	चाय नास्ता एवं भोजन	
1184+155	29600	3000	0	34500	160680	227780

शालेय शिक्षण अनुभव सह श्रेष्ठ पालकत्व कार्यक्रम :–

इस कार्यक्रम के अंतर्गत चयनित प्रत्येक संकुल में 20 छात्राध्यापक (द्वितीय वर्ष के)अर्थात 04 संकुल में 80 छात्राध्यापक होंगे। संकुल में जिन छात्राध्यापकों को भेजा जाएगा वे छात्राध्यापक उसी विकासखण्ड के होंगे । छात्राध्यापक श्रेष्ठ पालकत्व के साथ –साथ संकुल के विद्यालयों में शालेय शिक्षण अनुभव कार्यक्रम को भी पूर्ण करेंगे। इस कार्यक्रम में छात्राध्यापकों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी । छात्राध्यापक दिन में विद्यालय , शिक्षक तथा बच्चों के बीच काम करेंगे तथा शाम व रात्रि को शिक्षकों के साथ घर –घर जाकर पालकों से श्रेष्ठ पालकत्व पर चर्चा करते हुए पालकों के द्वारा किए जा सकने वाले न्यूनतम कार्यक्रमों की जानकारी देंगे तथा पालकों को प्रेरित करेंगे।

लक्ष्य कार्ड का वितरण एवं उसका उपयोग करना :–

चयनित संकुल के प्रत्येक ऐसे पालकों को लक्ष्य कार्ड दिया जाएगा जिनके बच्चे कक्षा 12 वीं तक पढ़ रहे होंगे । इस कार्ड में बच्चे से संबंधित समस्त जानकारी रहेगी । कार्ड का वितरण घर –घर जाकर किया जाएगा । ऐसे पालक जिनके अभी बच्चे नहीं हैं ऐसे पालकों को लक्ष्य कार्ड उनके बच्चे होने पर छट्ठी के दिन उनके घर जाकर दिया जाएगा । छट्ठी के दिन नामकरण करते समय पालक से कहा जाएगा कि वे बच्चे के लिए छट्ठी के दिन ही विजन बनाएं । गांव के पालकों की उपस्थिति में उस कार्ड में बच्चे के बारे में माता पिता का लक्ष्य लिखा जाएगा । लक्ष्य कार्ड में कक्षा 12 वीं तक की शिक्षा

प्राप्त करने के लिए कब –कब क्या करना होगा इस बात की पूरी जानकारी रहेगी । पालकों को कहा जाएगा कि इस कार्ड को वे तब तक संभालकर रखें जब तक उसका बच्चा कक्षा 12 वीं उत्तीर्ण नहीं हो जाता। पालक राशन कार्ड या गरीबी रेखा की कार्ड की तरह इस कार्ड को संभालकर रखेंगे।

लक्ष्य कार्ड के दूसरी ओर पालकों द्वारा किए जा सकने वाले कार्यो का माहवार विवरण होगा । पालक कार्ड में उल्लेखित कार्यो को सम्पन्न करते हुए सही का निशान लगाएंगे । ऐसे पालक जो लक्ष्य कार्ड के अनुरूप अभी तक कार्य नहीं कर पाएं हैं उन्हें एस.एम.सी./शिक्षक /छात्राध्यापक के द्वारा प्रेरित किया जाएगा ।

लक्ष्य कार्ड के अनुरूप कार्य करते हुए पालक स्व –आंकलन करेंगे कि वे श्रेष्ठ पालकत्व से कितनी दूर हैं। ऐसे पालकों को शिक्षक तथा छात्राध्यापक इस बात की जानकारी देंगे कि उन्हें कब और क्या करना है।

शिक्षकों के लिए जॉब कार्ड (15 सूत्रीय कार्यक्रम):–

पालकों की तरह शिक्षकों के लिए भी न्यूनतम कार्य का निर्धारण किया जाएगा । संकुल के प्रत्येक शिक्षकों को यह कार्ड दिया जाएगा जिसमें उनके द्वारा किए जाने वाले अनिवार्य कार्यों का व्योरा होगा । पालकों की तरह शिक्षक भी अपने द्वारा किए गए कार्यो के आधार पर स्व–मूल्यांकन करेंगे । ये न्यूनतम कार्य इस तरह के हो सकते हैं –

- विद्यालय में समय पर उपस्थिति ।
- योजना बनाकर कक्षा शिक्षण।
- स्थानीय परिवेश में उपलब्धता के आधार पर शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण कर कक्षा शिक्षण में प्रयोग करना । पालकों को शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण तथा संकलन की दिशा में प्रेरित करना ।
- कक्षा में नवाचारी पद्धति के आधार पर शिक्षण और प्राप्त परिणामों का अभिलेखीकरण ।
- प्रतिदिन कम से कम 05 पालकों के घर जाकर सतत् सम्पर्क करना ।
- श्रेष्ठ पालकत्व के अंतर्गत पालकों के द्वारा किए गए कार्यों का अभिलेखीकरण ।
- बच्चों को सीखने का अधिक से अधिक अवसर देना ।
- छात्राध्यापकों को आवश्यक मार्गदर्शन एवं मदद देना ।

- एडेप्ट्स के मानकों के अनुरूप विद्यालय को विकसित करना ।
- मंद गति से सीखने वाले बच्चों की पहचान कर उन्हें सीखने के अवसर प्रदान करने हेतु उपचारात्मक शिक्षण करना।
- विभिन्न गतिविधियों के क्रियान्वयन में छात्राध्यापक तथा पालकों की मदद करना ।
- विद्यालय तथा बच्चों के विकास हेतु नवाचारी पद्धतियों का क्रियान्वयन ।
- एस.एम.सी.की बैठक को प्रभावी बनाने हेतु किए गए प्रयास का स्वआंकलन ।
- बच्चों के मूल्यांकन हेतु पालकों को सदैव प्रेरित करना ।
- कम से कम 05 पालकों में श्रेष्ठ पालकत्व की भावना का विकास करना ।

संभावित व्यय :–

लक्ष्य कार्ड की संख्या	मदवार व्यय					योग
	लक्ष्य कार्ड के प्रिटिंग में व्यय	यात्रा व्यय	मानदेय	आ. व्यय	चाय नास्ता एवं भोजन	
100000	48000	0	0	0	0	48000

पालकों के लिए न्यूनतम कार्यक्रम का निर्धारण :–

इस पूरे कार्यक्रम में पालकों के लिए न्यूनतम कार्यक्रम का निर्धारण किया जाएगा । पालकों के लिए निर्धारित कार्य इस प्रकार के होंगे :–

- प्रत्येक बच्चों की नियमित उपस्थिति सुनिश्चित करना ।
- विद्यालय में उपस्थित होकर शैक्षिक गतिविधियों पर शिक्षकों से बातचीत ।
- विद्यालय में प्रतिदिन पालकों की उपस्थिति हेतु समिति का गठन करना ।
- विद्यालयीन गतिविधियों के बारे में घर में बातचीत / गृह कार्य को पूर्ण कराना /गृह कार्य को सम्पन्न कराने हेतु गांव के किसी व्यक्ति को तैयार करना /प्रातः बच्चों को पढ़ने के लिए जल्दी उठाना / बच्चों का मूल्यांकन करना।

- सतत् एवं समग्र मूल्यांकन में शिक्षकों की मदद करना ।
- स्थानीय उपलब्धता के आधार पर शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण करना ।
- एस.एम.सी.के साथ प्रति सप्ताह अनौपचारिक बैठक का आयोजन ।
- विद्यालय की आवश्यकता को पूर्ण करने हेतु आवश्यक पहल करना।
- बच्चों में विभिन्न कौशलों (सह–संज्ञानात्क क्षेत्र)के विकास हेतु विविध कार्यक्रम का आयोजन।
- स्व–आंकलन एवं आगामी कार्य योजना का निर्माण करना।

उपरोक्त कार्य के क्रियान्वयन में शिक्षक तथा छात्राध्यापक पालकों की मदद करेंगे

शिक्षकों के लिए न्यूनतम कार्यक्रम का निर्धारण :–

पालकों की तरह शिक्षकों के लिए भी न्यूनतम कार्यक्रम का निर्धारण किया जाएगा । ये न्यूनतम कार्यक्रम कुछ इस तरह के हो सकते हैं–

- छात्राध्यापकों को मार्गदर्शन तथा मदद देने के लिए प्रति दिवस पालक सम्पर्क कार्यक्रम । यह कार्य विद्यालय की छुट्टी के बाद किया जाएगा ।
- विद्यालय में आने वाले पालकों तथा उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों का अभिलेख संधारित करना ।
- ऐसे पालकों की पहचान तथा उन्हें विद्यालय में आने के लिए प्रेरित करना जो विभिन्न कौशल में दक्ष हैं । ऐसे पालकों के माध्यम से विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करना ।
- पालकों से सम्पर्क कर सह संज्ञानात्मक क्षेत्र की गतिविधियों पर चर्चा तथा उसके क्रियान्वयन हेतु पालकों को प्रेरित करना ।
- पालकों से सम्पर्क कर बच्चों की प्रगति के बारे में जानकारी देना ।
- पालकों को स्व–आंकलन में मदद करना ।
- अपनी प्रभावी भूमिका को लेकर स्व–आंकलन करना ।
- सामुदायिक सम्मेलन का आयोजन कर विभिन्न मुद्दो पर चर्चा परिचर्चा करवाना ।
- छात्राध्यापकों के साथ बैठक का आयोजन कर श्रेष्ठ पालकत्व कार्यक्रम की समीक्षा कर आगामी रणनीति के बारे में डाइट को अवगत कराना ।

- श्रेष्ठ पालकत्व को बढ़ावा देने हेतु विविध कार्यक्रम जैसे – पालकों का सम्मान् , बच्चों की प्रगति पर बातचीत , पालकों के अनुभव सुनना , छात्राध्यापकों की मदद से विभिन्न शैक्षिक प्रहसनों का मंचन , बच्चों के बारे में आगामी व्यूह रचना पर पालकों से चर्चा जैसे कार्यक्रम का आयोजन करना।

विभिन्न कार्यों के निर्वहन हेतु दायित्व सौंपना :–

इस योजना के क्रियान्वयन में ग्राम स्तर पर विभिन्न लोगों को / संस्था / समिति / समूह को कार्य सम्पन्न करने का दायित्व सौंपा जाएगा । ये दायित्व कुछ इस तरह के हो सकते हैं –

- महिला स्व–सहायता समूह को विद्यालय की साफ –सफाई , स्वच्छता एवं संस्कार देने की जिम्मेदारी दी जाएगी ।
- गांव के बुजूर्गों को स्टोरी टेलिंग , कामगारों के कार्य , खेत खलिहान , फसल , पशु पक्षी , रिश्ते नातों पर बातचीत का जिम्मा सौंपा जाएगा ।
- गांव के हुनर मंद लोग माह में कम से कम एक बार बच्चों को अपने हुनर का प्रदर्शन करेंगे।

  इसके अतिरिक्त स्थानीय स्तर पर और भी कार्य सौंपे जा सकते हैं ।
- दुकान दार को दुकान का हिसाब किताब / बिल बनाने से संबंधित बातों की जानकारी देने का कार्य सौंपा जा सकता है।
- ग्राम पंचायत के पदाधिकारियों को चुनाव प्रक्रिया पर बातचीत करने का दायित्व दिया जाएगा ।
- गांव के किसी जानकार व्यक्ति को जिला तथा राज्य स्तर की प्रशासनिक व्यवस्था पर जानकारी देने का दायित्व सौंपा जाएगा ।
- किसी शासकीय व्यक्ति को उसके पेशे से संबंधित जानकारी देने का दायित्व दिया जा सकता है।
- पंचायत के पदाधिकारियों को वार्डवार इस तरह के कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी दी जाएगी ।

- स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों को स्वास्थ्य शिक्षा पर बातचीत करने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है। गांव के जानकार पालक भी इस काम को सहज ढंग से कर सकते हैं ।
- बैंक के अधिकारी कर्मचारी को बुलाकर छोटे –छोटे बचत तथा इससे होने वाले लाभ पर बातचीत के लिए आमंत्रित किया जा सकता है।

  इसके अतिरिक्त और भी ऐसी बातें हैं जिन पर बातचीत / कार्य करने का जिम्मा पालकों को दिया जाएगा ।

श्रेष्ठ पालकत्व को बढ़ावा देने वाले प्रहसन/ नाटक / फिल्म का प्रदर्शन :–

छात्राध्यापक स्थानीय पालकों के सहयोग से श्रेष्ठ पालकत्व पर आधारित प्रहसन /नाटक /शैक्षिक फिल्मों का प्रदर्शन शाम या रात्रि में करेंगे । प्रदर्शन पश्चात् इस पर चर्चा परिचर्चा की जाएगी तथा पालकों को श्रेष्ठ कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाएगा ।

श्रेष्ठ पालकत्व कार्यक्रम के प्रभारी तथा डाइट के संकाय सतत् मॉनीटरिंग कर कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए शिक्षक तथा छात्राध्यापकों को आवश्यक मार्गदर्शन देंगे । प्रत्येक 10 दिवस में एक समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। समीक्षा कार्यक्रम में प्राप्त फीड बैक के आधार पर आगामी कार्य हेतु रणनीति का निर्माण किया जाएगा ।

एक्सपोजर विजिट कार्यक्रम :–

शिक्षक तथा पालकों को एक दूसरे के द्वारा किए गए कार्यों के अध्ययन अवलोकन हेतु संकुल स्तर पर एक्सपोजर विजिट कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस कार्यक्रम से शिक्षक तथा पालकों को परस्पर सीखने का अवसर प्राप्त होगा। आवश्यक हुआ तो बेहतर कार्य करने वाले पालकों को एक दूसरे के गांवों में पालकों से चर्चा परिचर्चा करने हेतु भेजा जाएगा /आमंत्रित किया जाएगा ।

समीक्षा कार्यक्रम :–

इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक 10 दिवस पश्चात् छात्राध्यापक / शिक्षक/ एस. एम.सी./ महिला स्व–सहायता समूह / नवयुवक मण्डल को सौंपे गए कार्यों की समीक्षा

की जाएगी। समीक्षा के दौरान क्रियान्वयन एजेन्सी को आवश्यक सहयोगात्मक मार्गदर्शन दिया जाएगा ।

सामुदायिक सम्मेलन एवं सम्मान् समारोह :–

चयनित संकुल के समस्त गांवों में सामुदायिक सम्मेलन एवं सम्मान् समारोह का आयोजन किया जाएगा । इस कार्यक्रम में पालकों के द्वारा किए गए कार्यों के सकारात्मक परिणामों को सभी के समक्ष रखते हुए विद्यालय में अंकन भी करवाया जाएगा तथा ऐसे श्रेष्ठ पालकों का सम्मान् किया जाएगा।

संभावित व्यय :–

आकस्मिक व्यय	मदवार व्यय				योग
	स्टेशनरी	यात्रा व्यय	मानदेय	पालकों के सम्मान् हेतु प्रति विद्या. 1000/	
0	0	0	0	69000	69000

छात्राध्यापकों के लिए उन्मुखीकरण कार्यशाला :–

कार्यक्रम के अंत में पोस्ट सर्वे कराया जाएगा । सर्वे के पूर्व छात्राध्यापकों के लिए उन्मुखीकरण कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा ।

संभावित व्ययः–

प्रतिभागी संख्या	मदवार व्यय				योग
	स्टेशनरी	नास्ता	आकस्मिक व्यय	यात्रा	
80	1625	2600	2500	0	6725

कार्यक्रम के मूल्यांकन हेतु पोस्ट सर्वे :–

पोस्ट सर्वे का कार्य संकुलों में बदलाव करते हुए छात्राध्यापकों से ही सम्पन्न कराया जाएगा । अर्थात श्रेष्ठ पालकत्व के अंतर्गत संकुल में कार्य करने वाले छात्राध्यापक उस

संकुल में पोस्ट सर्वे का कार्य नहीं करेंगे ताकि पालकों के द्वारा किए गए कार्यों के माध्यम से छात्राध्यापकों का मूल्यांकन भी सही तरीके से किया जा सके । छात्राध्यापकों की मदद विद्यालय के प्रधान पाठक तथा एस.एम.सी.के सदस्य/ पालक करेंगे। सर्वे पश्चात् प्राप्त तथ्यों / आंकड़ों का विश्लेषण करते हुए कार्यक्रम का प्रतिवेदन तैयार किया जाएगा ।

संभावित व्ययः–

प्रति. संख्या	मदवार व्यय				मॉनीटरिंग	
	स्टेशनरी /प्रपत्रों के प्रिटिंग में व्यय	यात्रा व्यय 150/प्रति छात्राध्यापक	मानदेय 150/प्रति दिवस कुल 05 दिन	आक. व्यय		
80	15000	12000	60000	10000	12000	109000

तथ्यों का विश्लेषण तथा प्रतिवेदन तैयार करना :–

योजना के मूल्यांकन हेतु पोस्ट सर्वे से प्राप्त तथ्यों /आंकड़ों का विश्लेषण कर प्रतिवेदन तैयार किया जाएगा ।

संभावित व्ययः–

प्रति. संख्या	मदवार व्यय				योग
	/प्रपत्रों के प्रिटिंग में व्यय	यात्रा व्यय	मानदेय	प्रतिवेदन प्रिंटिंग	
80	5000	0	0	10000	15000

श्रेष्ठ पालकत्व हेतु कुल प्रस्तावित राशि – 689975.00

(छै लाख नवासी हजार नौ सौ पचहत्तर रूपए मात्र)

प्राचार्य
डाइट नगरी
जिला –धमतरी छ.ग.

योजना क्र. – 02
विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा को प्रभावी बनाना

आज सारी दुनिया संगणक की मदद से शिक्षा प्राप्त होने की ओर अग्रसर है। ज्यादातर पालक, शिक्षक और छात्र संगणक को सीखने का स्त्रोत मानते हैं।उनका मानना है कि कम्प्यूटर शिक्षा होनी चाहिए जिससे गांव के बच्चे भी तकनीकी ज्ञान प्राप्त कर सकें। कम्प्युटर शिक्षा प्राथमिक स्तर से ही लागू किया जाये और सभी शिक्षकों को समय पर प्रशिक्षण दिया जाय। साथ ही तकनीक का उपयोग केवल तकनीकी साधन के रूप में ही नहीं वरण शैक्षणिक साधन के रूप में किया जाये। कम्प्यूटर की जानकारी समय की मूलभूत आवश्यकता में शामिल है अतः प्रारंभिक स्तर से ही बच्चों को इसकी जानकारी देने की आवश्यकता है।

हमारे जिले में उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए जिले के कुछ चुने हुए विद्यालयों को कम्प्यूटर प्रदान किया गया है परंतु देखा गया है कि जिले के जिन विद्यालयों में कम्प्यूटर है वहां उसका उपयोग उचित प्रकार से नहीं हो पा रहा है । उचित मार्गदर्शन एवं कम्प्यूटर शिक्षा के महत्व को समझ नहीं पाने के कारण ऐसी स्थिति निर्मित हुई है । जिन विद्यालयों में समुदाय के माध्यम से कम्प्यूटर प्राप्त हुआ है वहां के विद्यालयों में पालकों की जागरूकता की वजह से कुछ स्थिति बेहतर है, पर वहां भी कम्प्यूटर के माध्यम से बच्चों को क्या सीखाएं ये समस्या बनी हुई है। जिन विद्यालयों में शासन द्वारा कम्प्यूटर प्रदाय किया गया है वहां अधिकांश जगहों पर कम्प्यूटर की उचित जानकारी के अभाव में बच्चों को इसका लाभ नहीं मिल पा रहा है।

मानीटरिंग के दौरान पाया गया कि अधिकांश विद्यालयों के शिक्षक कम्प्यूटर के संबंध में सामान्य जानकारी नहीं रखते एवं कम्प्यूटर का उपयोग करने से बचते हैं तथा बच्चों को भी कम्प्युटर के प्रयोग से वंचित रखते हैं। जबकि देखा गया है कि जिन विद्यालयों में कम्प्यूटर का उपयोग बच्चे करते हैं वहां के बच्चों का आत्मविश्वास अन्य बच्चों की तुलना में बेहतर है।

अतः ऐसे विद्यालय जहां कम्प्यूटर उपलब्ध हैं वहां के शिक्षकों को इस हेतु प्रशिक्षित करने एवं उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है तथा विद्यालय के कम्प्युटरों में शैक्षिक सामग्री डालने की भी आवश्यकता है। विद्यालयों के ऐसे कम्प्यूटर जिनमें सामान्य तकनीकी त्रुटियां हैं उन्हें दूर करने की भी आवश्यकता है क्योंकि जानकारी के अभाव में सामान्य त्रुटि के कारण भी मशीनें बंद पड़ी हुईं हैं।

ऐसे विद्यालय के शिक्षकों को तथा वहां के पालकों को कम्प्यूटर संबंधी प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। शिक्षकों के लिए यह प्रशिक्षण जिले के ऐसे चुने हुए संकुल केन्द्रों में दिया जाएगा जहां अधिक से अधिक ऐसे शिक्षक शामिल हों सकें जिनके विद्यालयों में कम्प्यूटर उपलब्ध हैं।

उद्देश्य–

अजीम प्रेमजी फाउंडेशन द्वारा कुरूद विकासखंड के 20 विद्यालयों में कम्प्यूटर प्रदान कर ''संगणक आधारित शिक्षा''नाम से योजना लागू किया गया जिसके प्रभाव का अध्ययन डाइट नगरी के शोध के माध्यम से किया गया जिसमें वहां के शिक्षकों के विचार इस प्रकार थे–

- ❖ सभी स्कुलों में कम्प्यूटर शिक्षा को अनिवार्य कर देना चाहिए।
- ❖ छात्रों के लिए कम्प्यूटर पाठ्य सामग्री के रूप में बहुत उपयोगी है, कम्प्यूटर द्वारा विषय वस्तु छात्रों के लिए बहुत ही रोचक है और उसे रूचिपूर्वक अध्ययन करते हैं।
- ❖ कम्प्यूटर शिक्षा होनी चाहिए ताकि गांव के बच्चे भी तकनीकी ज्ञान पा सकें। कम्प्यूटर दक्ष शिक्षक की कमी महसूस होती है। इसकी पूर्ति प्रशिक्षण से की जा सकती है।
- ❖ इस विषय पर शासन द्वारा एक अलग प्रयास होना चाहिए और जो रूचिपूर्वक भाग लेते हैं उन शिक्षकों को इस विषय का पूर्णतः जानकार शिक्षक बनाना चाहिए।
- ❖ कम्प्यूटर आधारित शिक्षा में बच्चों के साथ साथ सभी शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।
- ❖ सहायक शिक्षण सामग्री के रूप में भी सभी स्कूलों में प्रदान किया जाना चाहिए।

- ❖ कम्प्यूटर के माध्यम से किसी भी अवधारणा को बच्चों को समझाने के कई तरीके मिल गए हैं जो उनके रूचि के अनुकुल है, इसमें बच्चे स्वयं कार्य करते हुए सीखते हैं।
- ❖ कम्प्यूटर तकनीकी साधन होने के साथ साथ बच्चों के सीखने के लिए एक सहायक सामग्री के रूप में कार्य करता है।
- ❖ खराब कम्प्यूटर के सुधार हेतु विकासखंड स्तर पर सुधारक होना चाहिए ताकि समय रहते कम्प्यूटर सुधर जाए।
- ❖ कम्प्यूटर चलाने के लिए बिजली बिल जमा करने हेतु प्रबंधकीय सहयोग होना चाहिए।

निष्कर्ष के रूप में हमारे सामने अधोलिखित बातें सामने आई थी–

- कम्प्यूटर समर्थित योजना का बच्चों के शैक्षणिक प्रगति पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा है।
- कम्प्यूटर के रखरखाव व सुधार की व्यवस्था जैसी समस्याएं हैं।
- कम्प्यूटर प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी है।
- कम्प्यूटर के माध्यम से बच्चे बेहतर सीखते हैं ।

इस प्रकार सहज ही देखा जा सकता है कि शिक्षक कम्प्युटर के महत्व को स्वीकारते हैं परंतु कैसे ? ये नहीं जानते। यदि शिक्षकों को हार्डवेयर एवं शाफ्टवेयर की सामान्य जानकारी देकर स्वअध्ययन हेतु प्रेरित किया जाय तो निश्चित रूप से यह एक प्रभावी कार्य होगा।

शैक्षिक गुणवत्ता की दृष्टि से योजना की आवश्यकता एवं महत्वः–

- कम्प्यूटर के माध्यम से बच्चे किसी भी विषय वस्तु को बहुत ही रोचकतापूर्वक एवं तन्मयता से सीखते हैं,
- बच्चों के पाठ्यक्रम के साथ कम्प्यूटर को जोड़कर बच्चों को उनके रूचि अनुकूल शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

- कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षा में गुणवत्ता लाई जा सकती है एवं सीखने की क्रिया को रोचक बनाया जा सकता है।
- कम्प्यूटर शिक्षा आज की तकनीकी युग में बेहद जरूरी है और बच्चों को तकनीक से जोड़कर पढ़ाने से उनमें सीखने की क्षमता बढ़ेगी।
- बच्चों कम्प्यूटर जानने की इच्छा रखते हैं ओर उन्हें इसका अवसर मिलना चाहिए ताकि आने वाले समय में बच्चें वो कर सके जिसे हम नहीं कर सके।
- कम्प्यूटर के माध्यम से बच्चों में तेजी से सीखने की क्षमता का विकास होता है तथा उनका मनोरंजन भी साथ साथ होने से उनका मानसिक विकास होता है ।
- तकनीकी आधारित शिक्षा के माध्यम से चित्रात्मक गतिविधि द्वारा सीखने सीखाने की प्रक्रिया को मनोरंजक एवं रोचक बनाया जा सकता है ।
- बच्चे कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षा को उपयोगी व आनंददायी शिक्षा समझते हैं एवं कम्प्युटर में रूचि लेकर कार्य करते हैं।
- कम्प्यूटर शिक्षा के माध्यम से बच्चों की कल्पना शक्ति एवं तर्क शक्ति को बढ़ाया जा सकता है।

कम्प्यूटर के माध्यम से विद्यार्थियों में निम्न दक्षताओं का विकास किया जा सकता है –

- **गणित –**

  अंको का ज्ञान, जोड़ घटाना, घटते क्रम एवं बढ़तें क्रम, गुणा भाग की अवधारणा , चित्र व खेल, स्थानीय मान, आदि को चलचित्रों के माध्यम से आसानी से सीख सकते हैं।
- संख्याएं गिनना, ज्यामिति गणित, संख्या जानना, पहाड़े का विकास, इकाई दहाई का ज्ञान,वर्गीकरण, माप,दशमलव, प्रतिशत, भिन्न, लाभ–हानि, इबारती प्रश्न हल करना, कम्प्यूटर में जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग, छोटे–छोटे इबारती प्रश्न खेल के माध्यम से (सी.डी. के माध्यम से) गणितीय सवालों को हल करना, गणितीय संक्रियाओं को चित्र, आवाज के माध्यम से सुनकर, देखकर, स्पष्ट रूप से सीख सकते हैं।

- बच्चों की रूचि पढ़ने में व गणित के सवालों को हल करने से मानसिक विकास में वृद्धि की जा सकती है।
- गणितीय संकियाओं को बच्चे गेम के माध्यम से रूचिपूर्वक सीखते हैं।
- ज्यामितिय आकृतियां कोण, वृत्त, त्रिभुज, चतुर्भज, वर्ग, आयत आदि पर बच्चों की स्पष्ट समझ बनाई जा सकती है।

- तर्क–शक्ति, जिज्ञासा प्रवृत्ति , बौद्धिक क्षमता, कल्पना शक्ति, खेल के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना, खोज करना, समुह में समस्या का हल निकालना, अपने विचारों को अभिव्यक्त करना, स्वयं के द्वारा कुछ करना, अपनी समझ को अन्य विद्यार्थियों के साथ बांटना, स्वतः अन्वेषण, आदि गुणों का विकास संभव है।

- कम्प्यूटर शिक्षा से विद्यार्थी में चेतना शक्ति, जिज्ञासा, एकाग्रता आदि गुणों का विकास होता है।

भाषा–

- कम्प्यूटर के माध्यम से बच्चों का पढ़ने लिखने व सुनने बोलने तथा समझने के कौशल का विकास संभव है।

पर्यावरण–

- चित्रकला, जीव–जन्तुओं की सूची देखकर परिचय पाना, छोटे बड़े वस्तुओं की पहचान, सजीव निर्जीव, मौसम, पेड़–पौधे, मापन, आदि पर स्पष्ट समझ बना पाने में सफल हो सकते हैं।

अन्य –

- कम्प्यूटर खोलना बंद करना, पेंट ब्रश में काम करना, चित्र बनाना, रंग भरना उसमें संख्या टाईप करना, कट, कापी. पेस्ट, म्यूजिक सुनना, सी.डी. देखना, वर्ड खोलकर लेखन, एम,एस, पावर प्वाइंट से प्रस्तुतीकरण, स्लाईड बनाना, पिक्चर इंसर्ट करना आदि में भी सामान्य दक्षता हासिल कर सकते है।

रणनीति :– उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अधोलिखित रणनीति का निर्माण किया गया है –

01 प्रशिक्षणः–ऐसे चुने हुए सुकुल केन्द्रों में शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा जहां अधिक से अधिक ऐसे शिक्षक शामिल हों सकें जिनके विद्यालयों में कम्प्युटर उपलब्ध हैं। जिसमें लगभग 300 शिक्षकों को कम्प्यूटर संबंधी निम्न बिन्दुओं पर सामान्य जानकारी प्रदान की जाएगी –

- कम्प्यूटर ज्ञान
- बेसिक आपरेशन्स
- वर्ड प्रोसेसिंग
- स्प्रीड शीट
- मल्टीमिडिया
- इंटरनेट
- डाटा टुल्स
- हार्डवेयर एवं शॉफ्टवेयर

02 विद्यालय में उपलबब्ध कम्प्यूटर्स की सामान्य तकनीकी त्रुटियों को दूर करना –

यथासंभव कम खर्च में सुधार हो सकने वाली त्रुटियों को सुधार किया जाएगा।

03 विद्यालय में उपलब्ध कम्प्यूटर्स में शैक्षिक सी.डी. इंस्टाल करनाः–

विभिन्न स्त्रोतों से शैक्षिक सी.डी. प्राप्त कर उन्हें विद्यालय के कम्प्यूटर्स में इंस्टाल किया जाएगा तथा संबंधित शिक्षक को इस संबंध में पूरी जानकारी प्रदान की जाएगी।

04 कम्प्यूटर के माध्यम से कक्षा शिक्षण :–

शिक्षकों को कम्प्यूटर की जानकारी एवं शैक्षिक सी.डी.इंस्टाल करने के बाद विद्यालयों में कम्प्यूटर आधारित शिक्षण का कार्य करवाया जाएगा ।

05 समुदाय की सहभागिता :–

समुदाय के लोग भी अपने बच्चों को कम्प्यूटर सीखाने एवं कम्प्यूटर्स के रखरखाव में सहायता कर सकते हैं इस बात को ध्यान में रखकर समुदाय का सहयोग लिया जायेगा ।

धमतरी जिले में प्राथमिक शाला डोंगरी पारा में पालक अपने बच्चों को कम्प्यूटर सिखाते हैं ।पालकों की जागरूकता से वहां के बच्चे कम्प्यूटर सीख गए हैं/ सीख रहे हैं ।

05 रा.गा.शि.मि. से संपर्क – विद्यालयों में कम्प्यूटर्स प्रदान करने वाली संस्था से इस योजना के संबंध में आवश्यक सहयोग लिया जाएगाा।

06 सतत मॉनीटरिंग :–शिक्षकों के द्वारा किये जा रहे कार्यों की सतत मॉनीटरिंग की जायेगी।

07 एक्सपोजर विजिट :– जिले के अन्य शिक्षकों को ऐसे विद्यालयों का एक्सपोजर विजिट कराया जायेगा जहां कम्प्यूटर शिक्षा पर अच्छा कार्य हुआ है जिससे अन्य शिक्षकों को भी मार्गदर्शन व प्रेरणा मिले ।

08 **मूल्यांकन** :– शिक्षकों के द्वारा किये जा रहे कार्यों का मूल्यांकन कर उन्हें आवश्यक मागदर्शन भी दिया जायेगा ।

09 **अध्ययन :–**कम्प्यूटर समर्थित विद्यालय तथा गैर कम्प्यूटर समर्थित विद्यालय के बच्चों के सीखने का तुलनात्मक अध्ययन एक शोध के रूप में किया जाएगा ।

संभावित व्यय –

लक्ष्य समूह :– प्राथमिक एवं माध्यमिक वर्ग के 200 शिक्षक ।

कुल शिक्षक :– 200

कुल दिवस :– 04

कम्प्यूटर प्रशिक्षक :–03 (हार्डवेयर एवं शॉफ्टवेयर)

कुल सहभागी 200

प्रशिक्षण का स्वरूप –गैर आवासीय

प्रशिक्षण के चरण –04 (50+50+50+50)

चाय नास्ता एवं भोजन 60/ प्रति व्यक्ति ,प्रति दिवस	48960 .00
आकस्मिक व्यय 25/ प्रति व्यक्ति , प्रति दिवस	20400.00
यात्रा देयक	70000.00

स्टेशनरी 25 / प्रति शिक्षक	5100.00
प्रतिवेदन / दस्तावेजीकरण हेतु	2000.00
शैक्षिक सी.डी. क्रय करने, फार्मेट तथा शॉफ्टवेयर इंस्टालेशन तथा सामान्य तकनीकी त्रुटि दूर करने हेतु तथा मानदेय	25000.00
मानीटरिंग	10000.00
शोध कार्य	5000.00
योग	**186460.00**

(एक लाख छियासी हजार चार सौ साठ रूपए मात्र)

प्राचार्य
डाइट नगरी
जिला धमतरी छ.ग.

योजना क्र. 03

भाषायी (हिन्दी में) दक्षता सुधार कार्यक्रम

प्राथमिक स्तर से लेकर हायर सेकेण्डरी स्तर तक देखा जाये तो बच्चों की भाषायी दक्षता में सुधार की आवश्यकता है। इसका कारण यह है कि शिक्षकों के दिलो दिमाग में यह बात घर कर गई है कि भाषा शिक्षण का मतलब सुनना , बोलना, पढ़ना तथा लिखना है । इससे आगे हम भाषा को नहीं देख पाए । हम मूल्यांकन की प्रक्रिया के दौरान भी इन्हीं बातों में उलझे रहे हैं । अब इस धारणा में बदलाव की जरूरत है।

राष्टीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में स्पष्ट उल्लेख है कि बच्चे की भाषा का सम्मान् हो । बच्चों की भाषा का सम्मान् किए बिना बच्चों को बेहतर शिक्षा दे पाना संभव नहीं है। निःशुल्क बाल शिक्षा का अधिकार 2009 कानून लागू हो जाने के बाद मूल्यांकन की प्रक्रिया में भी बदलाव आया है । अब बच्चों को रटन्त प्रणाली से बाहर निकालकर समझ आधारित शिक्षा देने की जरूरत है। समझ आधारित शिक्षा तब संभव है जब हम बच्चों की भाषा में शिक्षण कार्य करें । बच्चों की भाषा को समझने के लिए हमें भाषा की प्रकृति , बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं ? बच्चे का भाषायी परिवेश , भाषा का सामाजिक एवं राजनीतिक मुद्दा , बोली और भाषा के प्रश्न , पहले भाषा या लिपि जैसे सवालों को शिक्षकों को समझने की जरूरत है ।

शिक्षकों में भाषा की प्रकृति की समझ नहीं होने के कारण जाहिर है हम भाषा शिक्षण के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण नहीं अपना सकते । इसका परिणाम बच्चों में दिखाई पड़ता है ।बच्चों में भाषायी दक्षता का अभाव होने से अन्य विषय भी प्रभावित होते हैं क्योंकि किसी भी विषय को समझने के लिए भाषा की जरूरत पड़ती है । इसका तात्पर्य यह हुआ कि भाषायी दक्षता में वृद्धि होने से अन्य विषय की दक्षताओं में वृद्धि होना सहज है ।

प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर पर यदि देखा जाये तो न केवल शिक्षक अपितु बच्चे भी भाषा के प्रति गंभीर नहीं होते । शिक्षक तथा बच्चे दोनों के मन में भाषा के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का अभाव देखा गया है। इसका प्रभाव यह पड़ता है कि बच्चे भाषायी

दृष्टि से कमजोर होते हैं । बच्चों की भाषा कमजोर होने से अन्य विषय को भी समझने में परेशानी होती है। बच्चों से यह अपेक्षा की जाती है कि उनमें भाषायी कौशल का विकास हो ।

सत्र 2011–12 में जिले के चारों विकासखंडो से 6 संकुलों का चयन सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर आधारित सर्वे कार्य के लिए किया गया प्रत्येक संकुल की 10–10 शालाओं में कक्षा 3री से 8वी तक की कक्षाओं का सर्वे कार्य किया गया । ग्रामीण, अर्धशहरी एवं शहरी क्षेत्र के संकुल एवं विद्यालय का चयन सर्वे कार्य के लिए किया गया। प्रत्येक कक्षा में अधिकतम 30 विद्यार्थी का चयन किया गया। चयनित 60 विद्यालयों के 1271 बच्चों में भाषायी कौशल (हिन्दी)का विश्लेषण इस प्रकार प्राप्त हुआ।

प्राप्त आंकड़े :–

पढ़ना:– धमतरी जिले के कक्षा तीसरी से आठवीं तक के 1271 बच्चों के मूल्यांकन से प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि धारा प्रवाह एवं एवं शुद्ध पढ़ने में केवल 26% बच्चे सक्षम हैं जबकि 12% बच्चे पढ़ना ही नहीं जानते।

पढ़कर समझना एवं लिखना :– पढ़कर समझने एवं लिखने की दक्षता में केवल 13% बच्चे निपुण हैं।

चित्र देखकर लिखना:– 1271 बच्चों पर लिये गये सर्वेक्षण से पता चला है कि केवल 18% बच्चे ही लिख पाते हैं।

उपरोक्त विश्लेषण जिले के अधिकांश विद्यालयों में भाषायी दक्षता की गंभीर स्थिति की ओर संकेत करता है तथा इस दिशा में कार्य करने की महती आवश्यकता है।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन पर आधारित सर्वे पर इस प्रकार डाटा प्राप्त हुआ–

क्र.	कक्षा संकुलकेन्द्र विकासखंड	विद्यार्थी संख्या	पढ़ना			
			धाराप्रवाह एवं शुद्ध	अटक–अटक कर शुद्ध	अटक–अटक कर गलत	नहीं आता
1	तीसरी संकुलकेन्द्र–सेमरा नगरी	137	23	30	60	22
			17%	22%	44%	16%
2	चौथी संकुलकेन्द्र–मोंहदी मगरलोड	192	34	99	56	3
			18%	52%	29%	2%
3	पांचवी	188	51	53	64	20

	संकुलकेन्द्र–कंडेल धमतरी		27%	28%	34%	11%
4	छठवीं सं.केन्द्र–पोटियाडीह धमतरी	279	152	82	32	13
			54%	29%	11%	5%
5	सातवीं संकुलकेन्द्र–कुरूद. चर्रा कुरूद	262	62	73	86	41
			24%	28%	33%	16%
6	आठवीं संकुलकेन्द्र–सिहावा रतावा नगरी	213	14	39	109	51
			7%	18%	51%	24%
	योग जिला–धमतरी	1271	336	376	407	150
			26%	30%	32%	12%

क.	कक्षा संकुलकेन्द्र विकासखंड	विद्यार्थी संख्या	पढ़ कर समझना एवं लिखना			
			पुरा सही लिखना	कम गल्ती कर लिखना	अधिक गल्ती करना	नहीं लिखना आता
1	तीसरी संकुलकेन्द्र–सेमरा नगरी	137	11	29	59	28
			8%	21%	43%	20%
2	चौथी संकुलकेन्द्र–मोंहदी मगरलोड	192	28	84	68	12
			15%	44%	35%	6%
3	पांचवी संकुलकेन्द्र–कंडेल धमतरी	188	0	164	6	18
			0%	87%	3%	10%
4	छठवी सं. केन्द्र–पोटियाडीह धमतरी	279	54	114	105	6
			19%	41%	38%	2%
5	सातवीं संकुलकेन्द्र–कुरूद. चर्रा कुरूद	262	32	49	156	25
			12%	19%	60%	10%
6	आठवीं संकुलकेन्द्र–सिहावा रतावा नगरी	213	40	149	24	0
			19%	70%	11%	0%
	योग जिला–धमतरी	1271	165	589	418	89
			13%	46%	33%	7%

उपरोक्त डाटा से ज्ञात होता है कि –

- शिक्षकों को भाषा की प्रकृति की समझ नहीं है। शिक्षक भाषा को एक विषय के रूप में मानते हैं विषयों के आधार के रूप में नहीं ।
- भाषायी गतिविधियों का अभाव है। इसके लिये बच्चों में सुनने, बोलने , पढ़ने तथा लिखने का विकास करना आवश्यक है।

- भाषा शिक्षण के प्रति शिक्षक गंभीर नहीं है । अतः शिक्षकों में भाषा शिक्षण के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास करना आवश्यक है ।
- शिक्षकों में इस बात की समझ का अभाव है कि समृद्ध भाषा के अभाव में दूसरे विषय को सीख पाना संभव नहीं है।
- बच्चों में भाषायी दक्षता का अभाव है । उनमें भाषायी दक्षता का विकास करना आवश्यक है ।
- विद्यालयों में भाषा शिक्षण केवल पाठ्य पुस्तक तक सीमित हो गया है । शिक्षक पाठ्य पुस्तक से निकलकर परिवेश एवं बाहरी दुनिया को भाषा शिक्षण में नहीं जोड़ पाते ।
- बच्चे काफी अनुभवी हैं । उन्हें अपने स्थानीय परिवेश , रहन –सहन , रीति रिवाज , संस्कृति , पशु –पक्षी , खेत खलिहान आदि की विस्तृत जानकारी होती है लेकिन उनकी भाषा का सम्मान नहीं करने के कारण बच्चे शिक्षक की अपेक्षित भाषा में अपनी बात नहीं रख सकते।
- विद्यालयों में आज भी बच्चे की भाषा के प्रति शिक्षकों का नजरिया सम्मानजनक नहीं है।
- विद्यालयों में आज भाषा का शिक्षण भाषा शिक्षण के उद्देश्य के अनुरूप न होकर केवल शुद्ध भाषा के प्रयोग को ध्यान में रखकर किया जाता है।

  उपरोक्त बातों के आधार पर इस योजना की आवश्यकता है ।

<u>योजना के उदेद्श्य :–</u>

01 शिक्षकों में भाषा की प्रकृति की समझ विकसित करना ।

02 भाषा के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास करना ।

03 शिक्षकों को भाषा शिक्षण के उद्देश्यों की समझ विकसित करना ।

04 भाषा शिक्षण के उद्देश्यों के अनुरूप विद्यालयों में गतिविधियां सुनिश्चित करना

05 स्थानीय परिवेश को ध्यान में रखकर भाषा शिक्षण के लिए गतिविधियां तय करना ।

06 बच्चों में भाषायी कौशल का विकास करना ।

07 विद्यालयों में भाषा शिक्षण को समस्त विषयों के आधार के रूप में स्थापित करना

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर इस योजना का चयन किया गया ।

चयनित संकुल का नाम – सेमरा 'बी' विकासखण्ड कुरूद ।

संकुल समन्वयक का नाम – श्री नारायण सिंह साहू मोबा.9827946812

संकुल प्रभारी का नाम – श्रीमती मोतिम साहू मोबा. 9770981630

प्राथमिक विद्यालय के प्रधान पाठकों की जानकारी की जानकारी

क्र.	विद्यालय का नाम	प्रधान पाठक का नाम	प्र.पा.का मोबा.
01	प्राथ. शाला सेमरा	श्री यशवंत साहू	9754469682
02	प्राथ. शाला चांदपारा	रूपराम साहू	9770508807
03	प्राथ. शाला सुपेला	नरसिंह राम साहू	9009110636
04	प्राथ. शाला सिलघट	नरेन्द्र कुमार ध्रुव	9827935585
05	प्राथ. शाला सिलतरा	श्रीमती पद्मावती साहू	9770132868
06	प्राथ. शाला सिलीडीह	मुन्नालाल गायकवाड़	9165245700
07	प्राथ. शाला खपरी	सौमेश्वर सिंह गौतम	9827934571
08	प्राथ. शाला सिर्वे	नम्मूराम कुर्रे	9827920709

माध्यमिक विद्यालय के प्रधान पाठकों की जानकारी की जानकारी

क्र.	विद्यालय का नाम	प्रधान पाठक का नाम	प्र.पा.का मोबा.
01	माध्य. बा.शाला सेमरा	श्रीमती मोतिम साहू	9770981630
02	मा.क. शाला सेमरा	श्री पंचूराम ध्रुव	9098684893
03	मा. शाला चांदापारा	कु.फुलेश्वरी नेताम	9691132269
04	मा. शाला सुपेला	श्रीमती त्रिवेणी साहू	8435561868
05	मा. शाला सिलघट	श्री भंवरलाल साहू	7697777051
06	मा. शाला सिलीडीह	चेवाराम बैस	9926086903

संकुल में अध्ययनरत् बच्चों की संख्या –

क्र.	प्राथ.	माध्य.	महायोग

1	बालक	बालिका	योग	बालक	बालिका	योग	
	602	595	**1197**	464	495	**959**	**2156**

संकुल में कार्यरत शिक्षकों की संख्या –

क्र.	प्राथमिक विद्यालय	माध्यमिक विद्यालय	योग
1	35	26	61

संकुल के ग्राम पंचायत :–

क्र.	ग्राम पंचायत का नाम	सरपंच का नाम	मोबाईल	ग्राम पंचायत की कुल आबादी
01	सिर्वे	श्रीमती माधुरी यदु	9907158658	800
02	सेमरा 'बी'	कन्हैया लाल साहू	9575904871	3600
03	सुपेला	रोहित कुमार ध्रुव	8103585175	1800
04	सिलघट	संतराम सिन्हा	9098170923	2100
05	सिलीडीह	ठाकुर राम ध्रुव	9907162771	2000
06	जरवायडीह	नवदीप सिंह चन्द्राकर	9406021796	900

रणनीति एवं क्रियान्वयन :–

कार्यशाला का आयोजन

इसके अंतर्गत शिक्षकों के लिये संकुल स्तर पर **03 दिवसीय** गैर आवासीय कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा। कार्यशाला में विद्यालय में भाषा शिक्षण की स्थिति , शिक्षकों की भाषा के प्रति धारणा ,बच्चों की भाषायी उपलब्धियों पर चर्चा परिचर्चा करते हुये अधोलिखित बिन्दुओं पर चर्चा की जाएगी–

- भाषा की प्रकृति पर चर्चा
- भाषा और बोली
- कक्षा में बच्चे की भाषा का स्थान
- अभी भाषा शिक्षण में क्या हो रहा है?

- भाषा शिक्षण का उद्देश्य क्या है ?
- बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं?
- भाषा का सामाजिक व राजनैतिक ताना–बाना।
- संवैधानिक प्रावधान और त्रिभाषा सूत्र।
- क्या बच्चों की भाषायी दक्षता संतोष जनक है ?
- क्या भाषा शिक्षण के प्रति शिक्षक तथा बच्चे गंभीर हैं ?
- भाषायी दक्षता का अभाव होने के क्या क्या कारण हैं ?
- भाषायी दक्षता का अभाव होने से अन्य विषय को समझने में किस तरह की कठिनाई होती है ?
- भाषायी दक्षता में सुधार कैसे लाया जा सकता है ?
- भाषायी दक्षता हेतु स्थानीय गतिविधियां ? क्यों और कैसे ?
- बच्चे भाषा संबंधी क्या –क्या त्रुटियां करते हैं ? इन त्रुटियों का निवारण कैसे किया जा सकता है?
- बच्चों को भाषा सिखाने के अवसर कैसे –कैसे ?
- भाषा शिक्षण में प्रोजेक्ट क्यों और कैसे ?
- भाषा शिक्षण में सृजन : क्षेत्र और तरीके ।
- भाषा सृजन में समुदाय की भागीदारी
- भाषा शिक्षण में मूल्यांकन क्यों और कैसे ?

संभावित व्यय :–

प्रति. संख्या	मदवार व्यय					योग
65	स्टे.	चाय नास्ता एवं भोजन 60 प्रति व्यक्ति प्रति दिवस कुल 03 दिन	यात्रा देयक	आक.व्यय 25 प्रति व्यक्ति 03 दिवस	आक. व्यय	
	1625	11700	5000	4875	23200	46400

बच्चों के लिए भाषा शिविर का आयोजन :–

बच्चों के लिए **05 दिवसीय** भाषायी शिविर का आयोजन सीधे डाइट में किया जाएगा । इस शिविर में प्रत्येक विद्यालय से 02 बच्चे तथा 01 शिक्षक शामिल होंगे । इस तरह से इस शिविर में प्राथमिक स्तर से 08 बच्चे कक्षा 04 के 08 बच्चे कक्षा 05 के , 06 बच्चे कक्षा 07के तथा 06 बच्चे कक्षा 08 के शामिल होंगे । प्रत्येक विद्यालय से 01 –.01 शिक्षक शामिल होंगे । इस तरह से कुल 42 प्रतिभागी इस शिविर में होंगे । इस शिविर में किए गए भाषा संबंधी गतिविधियों को पत्रिका के रूप में प्रकाशित कर जिले के विद्यालयों में भेजा जाएगा ।

शिविर का उद्देश्य :–

इस शिविर के उद्देश्यों अधोलिखित हैं–

- भाषा की प्रकृति पर बेहतर समझ बनाना ।
- भाषा शिक्षण के उद्देश्यों पर समझ विकसित करना ।
- भाषायी गतिविधियों को समझना ।
- भाषागत व्यावहारिक गतिविधियों को समझना ।
- विद्यालय स्तर पर किए जा सकने वाले कार्यों को व्यावहारिक रूप देना।

शिविर से जाने के बाद :–

शिविर से जाने के बाद ये शिक्षक तथा बच्चे अपने विद्यालय में :–

- भाषायी गतिविधियों के क्रियान्वयन में नेतृत्व का निर्वाह करेंगे ।
- समुदाय के द्वारा आयोजित गतिविधियों में मार्गदर्शन सह आयोजक की भूमिका का निर्वाह करेंगे ।
- शिक्षकों की उपस्थिति /अनुपस्थिति में बच्चे कक्षा में भाषायी गतिविधियों का क्रियान्वयन करेंगे ।
- विद्यालय स्तर पर भाषा का कार्नर बनाकर कक्षा शिक्षण में उसका उपयोग सुनिश्चित करेंगे ।
- भाषागत सामग्री का निर्माण करेंगे ।
- बच्चे कक्षा में अपने सहपाठियों की मदद करेंगे ।

- भाषायी कौशल के विकास हेतु विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करेंगे ।

संभावित व्यय :–

प्रति. संख्या	मदवार व्यय					योग
42+4	स्टे.	चाय नास्ता एवं भोजन 46 प्रति व्यक्ति प्रति दिवस कुल 05 दिन	यात्रा देयक	आक.व्यय 25 प्रति व्यक्ति 05 दिवस	पत्रिका	
	1150	25300	15000	5750	40000	87200

- **<u>न्यूनतम कार्यों का निर्धारण :–</u>**

इसके अंतर्गत सबसे पहले उपलब्धि सर्वे से प्राप्त आंकड़ों पर शिक्षकों से चर्चा परिचर्चा की जाएगी । शिक्षकों से उनके विद्यालय के बच्चों की उपलब्धियों पर चर्चा की जाएगी । चर्चा परिचर्चा के बाद शिक्षकों को कहा जाएगा कि वे अपने विद्यालय की भाषायी आवश्यकता का निर्धारण स्वयं करें कि भाषा शिक्षण में क्या –क्या करने की जरूरत है ? चर्चा परिचर्चा के बाद संकुल के समस्त विद्यालयों में न्यूनतम कार्यों का निर्धारण कर उसका क्रियान्वयन किया जाएगा ।

***<u>न्यूनतम क्रियाकलाप</u>* :–**

- प्रार्थना के अवसर पर बच्चों के द्वारा सुभाषित वाक्य बोलवाना ।
- प्रार्थना के अवसर पर जन्म दिन वाले बच्चों से उनके सपनों पर बातचीत करवाना । इस अवसर पर बच्चों के माता –पिता को भी आमंत्रित किया जाएगा ।
- प्रार्थना के अवसर पर बच्चों से ' आज के समाचार ' पढ़वाना ।
- विद्यालयों में वाचनालय की स्थापना एवं उसका सदुपयोग सुनिश्चित करना ।
- वाचनालय की स्थापना में पालकों का सहयोग लेना ।

- दीवारी पत्रिका का प्रकाशन
- विद्यालय स्तर पर हस्त लिखित पत्रिका का प्रकाश करवाना ।
- कक्षा में कहानी , कविता , अनुभव कथन , दृश्य वर्णन ,रोजमर्रा पर बातचीत आदि का आयोजन करना ।
- भाषायी खेलों का आयोजन करना ।
- चित्रों पर बातचीत
- भाषायी शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण करना । इस प्रक्रिया में बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करना ।
- विद्यालय में सुभाषित वाक्य अनमोल वचन का लेखन करवाना।
- बच्चों में पुस्तक वाचन की प्रवृत्ति का विकास करना ।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन कर बच्चों में संवाद कौशल विकसित करना।
- विद्यालय स्तर पर विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन करना ।
- उपरोक्त गतिविधियों के क्रियान्वयन हेतु विविध समिति का गठन कर उन्हें जिम्मेदारी देना
- बच्चों की उपलब्धि को जानने हेतु मासिक मूल्यांकन का आयोजन करना ।
- बच्चों से छोटे –छोटे प्रोजेक्ट कार्य करवाना , जैसे – विरोधी शब्द, शब्दार्थ , लिंग , समश्रुति भिन्नार्थक शब्द , एक वचन , बहु वचन , पर्यायवाची शब्द , उपसर्ग , प्रत्यय , इत्यादि विषय पर।

<u>विविध समितियों का गठनः–</u>

उपरोक्त न्यूनतम गतिविधियों के क्रियान्वयन हेतु विद्यालय स्तर पर विविध समितियों का गठन किया जाएगा । गठित समिति के लोगों से भी बातचीत की जाएगी कि वे भाषायी गतिविधियों के क्रियान्वयन में अपनी बेहतर भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं। गठित समिति के लोगों को जिम्मेदारी भी दी जाएगी । इस समिति में बच्चों को शामिल कर उन्हें भी जिम्मेदारी दी जाएगी ।

01 प्रार्थना समिति :–

इस समिति को प्रार्थना के अवसर पर बच्चों से समाचार का वाचन करवाना , अनमोल बचन , आज के विचार , जन्म दिन वाले बालकों की पहचान कर उन्हें बधाई देना , उन्हें दो शब्द अपने सपने के बारे में बोलने का अवसर देना । सुभाषित वाक्य का पठन , अनुभव कथन आदि को शामिल किया गया ।

02 सामग्री निर्माण समिति :–

इस समिति को यह जिम्मेदारी दी जाएगी को वे बच्चों सहयोग से भाषायी शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण करे तथा कक्षा में उसे व्यवस्थित करे जिससे कक्षा शिक्षण में उसका उपयोग किया जा सके । शिक्षक सामग्री निर्माण में पालकों का भी सहयोग ले सकते हैं । विद्यालय के दीवारों पर भाषा शिक्षण से संबंधित बातों का अंकन करवाया जाएगा । विविध सामग्रियों का संकलन भी पालकों के सहयोग से किया जाएगा ।

03 भाषायी गतिविधि समिति :–

इस समिति को यह दायित्व होगा कि वे शनिवार को विविध भाषायी प्रतियोगिता का आयोजन करे । इसके अंतर्गत श्रुल लेख , अनुलेख , सुलेख , भाषण , कहानी लेखन , चुटकुले सुनाना , कविता सुनाना , चित्र देखकर बोलो , चित्र देखकर कहानी लिखो जैसी गतिविधियों को शामिल किया जाएगा।

04 वाचन समिति :–

बच्चों में वाचन की प्रवृत्ति विकसित करने के लिए इस समिति का गठन किया जाएगा ।

05 प्रोजेक्ट समिति :–

प्रोजेक्ट समिति के अंतर्गत छोटे –छोटे प्रोजेक्ट कार्य सौंपकर बच्चों से कार्य करवाना था । बच्चे इस प्रोजेक्ट कार्य को विद्यालय अथवा विद्यालय के बाहर भी सम्पन्न कर सकते हैं । स्तर के अनुरूप कार्यों का निर्धारण किया जाएगाा ।

साप्ताहिक कार्यक्रम का आयोजन :–

इस योजना के अंतर्गत प्रति सप्ताह भाषायी कौशल के किसी एक कौशल पर काम किया जाएगा । जैसे प्रथम सप्ताह सुनना । बच्चे सुनेंगे और अपनी प्रतिक्रिया लिखकर या बोलकर व्यक्त करेंगे । अगले सप्ताह बोलना पर गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा । इस तरह से प्रति सप्ताह भाषायी गतिविधियों का क्रियान्वयन किया जाएगा । शाला स्तर पर आयोजित प्रत्येक गतिविधियों का रिकार्ड तथा बच्चों के द्वारा की जाने वाली गतिविधियों का रिकार्ड रखा जाएगा । प्रत्येक बच्चों की उपलब्धियों के अभिलेख का संधारण किया जाएगा । कार्यक्रम में पालकों की सहभागिता सुनिश्चित की जाएगी ।

सामुदायिक सम्मेलनों का आयोजन :–

एस.एम.सी.से बातचीत कर उनके सहयोग से पालकों में आत्मविश्वास लाने के लिए सामुदायिक सम्मेलनों का आयोजन प्रत्येक गांव में किया जाएगा। इस कार्यक्रम में पूरी शिक्षा व्यवस्था में पालकों की भागीदारी के साथ –साथ विशेषकर इन्सान के जीवन में भाषा की भूमिका और भाषा शिक्षण में माता पिता की भूमिका पर बातचीत की जाएगी । पालकों को यह बताया जाएगा कि अनौपचारिक परिस्थितियों में भी भाषा का शिक्षण संभव है और इस कार्य में उनकी महती भूमिका है। पालकों के द्वारा भी बातचीत , चित्रों पर बातचीत , खेत खलिहान पर बातचीत , नाते रिश्तों पर बातचीत का आयोजन किया जाएगा तथा बच्चों को भी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाएगा । ऐसे अवसरों पर पालक स्वयं अपने बच्चों का मूल्यांकन करेंगे ।

जन्म दिवस स्कूल में किताबों के साथ :–

पालकों को प्रेरित किया जाएगा कि वे बच्चों के जन्म दिन पर विद्यालय आएं तथा बच्चों के भविष्य के बारे में बातें करें । बच्चों को भी अवसर दिया जाएगा कि वे अपने सपनों पर बात करें। इस हेतु शिक्षकों के द्वारा पहले से ही बच्चों की तैयारी करायी जाएगी। पालकों को प्रेरित किया जाएगा कि वे बच्चों के जन्म दिवस पर गिफ्ट के रूप में बच्चों के माध्यम से विद्यालय को किताबें भेंट में दें । ऐसा करने पर विद्यालय का वाचनालय भी समृद्ध होगा ।

वाचनालय का नियमित उपयोग :–

पालकों के सहयोग से वाचनालय को समृद्ध कर इसका नियमित उपयोग सुनिश्चित किया जाएगा। बच्चों को बारी –बारी से यह अवसर प्रदान किया जाएगा । बच्चों के द्वारा

पढ़े हुए अंशों पर बच्चों से बातचीत कर उनकी प्रतिक्रिया भी ली जाएगी। प्रार्थना में तथा कक्षा में ऐसे बच्चों को प्रतिक्रिया व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जाएगा।

अनुवर्ती क्रियाकलाप :–

शिक्षकों को निर्देश दिया जाएगाा कि वे अपने विद्यालय में इस गतिविधि का संचालन करते रहें ताकि बच्चों को और अधिक सीखने का अवसर प्राप्त हो । प्रार्थना के अवसर पर आज के समाचार , आज के विचार , तथा जन्म दिवस वाले बच्चे को बोलने का अवसर देंगे । इसके अतिरिक्त सह संज्ञानात्मक क्षेत्र के कार्यों को सम्पन्न कराते हुए चित्र निर्माण , रंगोली , मिट्टी का काम , कागज का काम आदि पर भी बातचीत करायी जा सकती है । इसके अतिरिक्त –

- कक्षा में बच्चों को अधिक से अधिक बातचीत करने का अवसर प्रदान करेंगे ।
- प्रति शनिवार को भाषायी गतिविधियां संचालित करेंगे ।
- विविध प्रतियोगिता के अवसर पर पालकों की सहभागिता सुनिश्चित करेंगे ।
- विद्यालयों में वाचन संस्कृति को बढ़ावा देंगे ।
- वाचनालय को और समृद्ध करेंगे ।
- बच्चों को अधिक से अधिक अनुभव लिखने का अवसर प्रदान करेंगे ।
- बच्चों की अभिव्यक्ति को बल मिले इस हेतु विद्यालय में बच्चों के लिए अभिव्यक्ति कार्नर की स्थापना करेंगे।
- बच्चे अपने द्वारा निर्मित सामग्री पर स्वयं बातचीत करेंगे शिक्षक केवल अवसर उपलब्ध कराएंगे
- प्रत्येक बच्चे के द्वारा निर्मित सामग्री को कक्षा में रखने का स्थान मिले जिससे हर बच्चा अपने द्वारा निर्मित सामग्री के बारे में बातचीत कर सके।

पोस्ट सर्वे का आयोजन :–

वर्ष के अंत में बच्चों के लिए पोस्ट सर्वे का आयोजन किया जाएगा। इस पोस्ट सर्वे में पालक,शिक्षक तथा बच्चों के द्वारा की गयी भाषायी गतिविधियां चाहे वह औपचारिक हो या अनौपचारिक सभी का सर्वे किया जाएगा। सर्वे में इस बात को भी देखा

जाएगा कि पूरे संकुल के बच्चों में भाषायी दक्षता का विकास किस रूप में हुआ है। बच्चों में आए बदलाव को विशेष रूप से रेखांकित करते हुए प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाएगा ।

संभावित व्यय :

क्र.	मदवार			
	मार्ग व्यय	मानदेय	आकस्मिक व्यय विभिन्न प्रपत्रों के प्रिटिंग हेतु एवं प्रतिवेदन हेतु	योग
01	5000	8400	10000	23400

भाषायी दक्षता सुधार कार्यक्रम में कुल प्रस्तावित राशि

(एक लाख संतावन हजार रूपये मात्र)

प्राचार्य
डाइट नगरी
जिला धमतरी छ.ग.

योजना क. 03

शोध एवं नवाचार का फिल्मांकन कर प्रशिक्षण हेतु दृश्य – श्रव्य सामग्री तैयार करना :–

जिला स्तर पर शिक्षकों के द्वारा शैक्षिक समस्या के समाधान हेतु कई तरह के नवाचार सम्पन्न किये जाते हैं । इन नवाचारों के द्वारा शैक्षिक समस्या का समाधान भी किया जाता है । शिक्षकों के द्वारा किये गये इन तरह के नवाचारों का अभिलेखीकरण / दृश्यांकन /श्रव्यांकन आवश्यक है ताकि नवाचार करने वाले शिक्षकों का मनोबल बढ़े तथा कार्य का व्यापक प्रचार प्रसार हो । इस तरह की सामग्री का प्रयोग विविध स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण में भी स्रोत सामग्री के रूप में किया जा सके । अतः जिला स्तर पर नवाचारों का दृश्यांकन कर इसका प्रयोग विविध स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण में करने हेतु कार्य योजना प्रस्तुत है ।

उद्देश्यः–

- नवाचार को प्रोत्साहित करना ।
- शिक्षकों को नवाचार के लिये प्रेरित करना ।
- शिक्षकों के द्वारा किये गये नवाचार का प्रचार प्रसार करना ।
- नवाचारी शिक्षकों के अनुभव का लाभ उठाने के लिये अन्य शिक्षकों को प्रेरित करना
- प्रशिक्षण हेतु प्रभावी स्रोत सामग्री का निर्माण करना ।
- विद्यालय की समस्याओं की संख्या में कमी लाना ।
- जिला स्तर पर एक स्रोत केन्द्र की स्थापना करना ।

महत्वः–

- इस कार्यक्रम से नवाचारी शिक्षकों को नवाचार करने हेतु बल मिलेगा ।
- शिक्षक नवाचार हेतु प्रेरित होंगे ।
- अपने बीच के शिक्षकों के कार्य को देखकर शिक्षक प्रेरित होंगे ।
- शिक्षकों की सोच में बदलाव आयेगा ।
- विद्यालय स्तर पर आने वाली समस्याओं का समाधान नवाचार करते हुए कर सकेंगे

- शिक्षण प्रक्रिया में नवाचार उपायों का समावेश होगा ।
- नवाचार का प्रचार प्रसार होगा ।
- शिक्षकों में नवाचार की समझ का विकास होगा ।

किस तरह के विषय का समावेश होगाः–

- कक्षागत प्रक्रिया / विद्यालय प्रबंधन
- किसी विषय वस्तु का शिक्षण
- समुदाय के द्वारा किया गया कोई कार्य
- सामुदायिक सहभागिता
- शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण तथा अनुप्रयोग
- बच्चों के द्वारा किया गया कोई नया कार्य
- सीखने सिखाने के तौर तरीके
- अन्य कार्य जिससे शिक्षकों को प्रेरणा मिले ।
- बच्चों के द्वारा अपनाए गए लीडर शिप
- स्थानीय स्तर पर उपलब्ध सामग्री का बेहतर उपयोग
- शिक्षकों के लिए आयोजित प्रशिक्षण में किए गए नवाचार
- विद्यालय / कार्यालय में हुए कार्यो का अभिलेखीकरण

लक्ष्य :–

जिला स्तर पर शिक्षा के विविध क्षेत्रों में किये गये 20 शिक्षक / पालक / विद्यालय के द्वारा किये गये कार्यों पर फिल्म का निर्माण किया जायेगा ।

चिह्नांकन :–

- मॉनीटरिंग के दौरान बच्चों से चर्चा परिचर्चा कर ।
- प्रशिक्षण के अवसर पर शिक्षकों से चर्चा परिचर्चा कर ।
- मॉनीटरिंग के दौरान पालकों से चर्चा परिचर्चा कर ।
- किए गए कार्यो का स्वयं अवलोकन कर ।

- समाचार पत्रों में प्रचार –प्रसार कर ।

जिला स्तरीय समिति का गठनः–

इस हेतु जिला स्तरीय समिति का गठन किया जायेगा जिसमें अधोलिखित सदस्य होंगे–

01 डाइट के प्राचार्य

02 विकासखण्ड के प्रभारी व्याख्याता

03 विकाखण्ड स्रोत समन्वयक

विकासखण्ड के प्रभारी व्याख्याता तथा विकासखण्ड स्रोत समन्वयक मॉनीटरिंग के दौरान इस तरह के कार्यों का पता लगायेंगे और इस पर समिति के सदस्यों के मध्य चर्चा परिचर्चा करेंगे । खण्ड स्रोत समन्वयक भी इस विषय पर चर्चा परिचर्चा कर डाइट को इस तरह के कार्यों की जानकारी देंगे । किसी कार्य पर फिल्म का निर्माण किया जाना है कि नहीं इस विषय पर समिति निर्णय लेगी ।समिति के निर्णय के उपरांत ही सामग्री का निर्माण किया जायेगा।

सामग्री का उपयोगः–

निर्मित सामग्री का उपयोग जिला , विकासखण्ड तथा संकुल स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण में किया जायेगा । जिला स्तर के शिक्षक/ पालकों के द्वारा किये गये कार्यों को देखकर अन्य शिक्षक निश्चित रूप से प्रेरित होगें ।

बजट प्रावधान :–

प्रत्येक फिल्म पर 1500.00 व्यय किये जायेंगे । कुल	30000.00
वाहन ,यात्रा देयक एवं अन्य आकस्मिक व्यय	8550.00
कुल व्यय	38550.00

(अड़तीस हजार पांच सौ पचास रूपये मात्र)

आवश्कतानुसार लघु कार्यशाला का आयोजन भी किया जायेगा ।

प्राचार्य
डाइट नगरी
जिला धमतरी छ.ग.

योजना क्र. 05:–

परिचयात्मक/शैक्षिक भ्रमण (Exposer/Educational Visit)

(अध्ययन अवलोकन यात्रा)

सर्व शिक्षा अभियान के तहत शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन के मद्देनजर अनेक गतिविधियों का संचालन जिले में हो रहा है। जिसमें शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में प्रारम्भ से ही चिन्हित है। इसी तरह गुणात्मक शिक्षा को प्राप्त करने में संकुल की मासिक बैठकें, विकास खण्ड स्रोत केन्द्र तथा डाईट के स्तर पर आयोजित होने वाली समीक्षा बैठकों का भी अहम् योगदान है।

विगत कुछ वर्षों से धमतरी जिले में गुणात्मक शिक्षा के मद्देनजर डाईट नगरी के द्वारा शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता के लिए अनेक तरह से पहल किए गए जिसमें समुदाय के लोगों को ऐसे गाँव का भ्रमण कराया जा रहा है जहाँ समुदाय के द्वारा गुणात्मक शिक्षा के लिए उल्लेखनीय प्रयास किये गए हैं। इस कार्यक्रम को **परिचयात्मक/शैक्षिक भ्रमण (Exposer/Educational Visit)** अध्ययन अवलोकन यात्रा के रूप में सुनियोजित ढ़ंग से जिले मे सम्पादित किया गया / किया जा रहा है। यह कहा जा सकता है कि विगत वर्षों के अनुभव के कामों में जो सबसे बड़ा अनुभव रहा है वह है एक्सपोजर विजिट के माध्यम से सामुदायिक सक्रियता में आश्चर्यजनक सकारात्मक बदलाव आया है। अतः इस अनुभव को और भी अधिक समृद्ध करने की आवश्यकता जिले में महसूस की जा रही है साथ ही इसे शाला से जिले स्तर तक के उन सभी आयामों में जिसका सम्मिलित परिणाम शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि के रूप में सामने आ सकती है, पर आधारित एक योजना सम्मिलित की जा रही हैं अंततः परिचयात्मक भ्रमण (Exposer Visit) को एक महत्वपूर्ण गतिविधि के रूप में जिले की वार्षिक योजना में शामिल करना प्रस्तावित है।

उद्देश्य–

- देश के विभिन्न राज्यों में शिक्षा में हो रहे उत्कृष्ट अभ्यास ;Good Practice) से परिचय प्राप्त करना।
- शिक्षा के बुनियादी प्रश्न 'शिक्षा के क्या उद्देश्य है?' को सम्बोधित करते हुए यह जानना कि कौन से शैक्षिक अनुभव किस तरह के चुनौतियों का सामना कर सकते हैं या कारगर होंगे।
- जिले में हो रहे कार्यों तथा अन्य राज्यों में चल रहे कार्यों पर विचार मंथन व समीक्षा करते हुए एक दूसरे के अनुभवों को बाँटने के लिए जिले के लोगों को मंच प्रदान करना।
- परिचयात्मक भ्रमण (Exposer Visit) कार्यक्रम को शिक्षकों एवं प्रबंधन स्तर पर कार्य कर रहे लोगों के लिए क्षमता विकास के लिए एक मॉडल के रूप में स्थापित करना / उपयोग करना / देखना।
- शिक्षकों एवं प्रबंधन स्तर पर कार्य कर रहे लोगों की दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव तथा व्यवसायिकता का विकास करना।
- राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के आलोक में रैखिक अनुभव के स्थान पर बहुविध एवं विभिन्न अनुभव तथा अनुभवों को साझा करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- शिक्षा के क्षेत्र में अन्य राज्यों में हो रहे बेहतर कार्य को समझते हुए जिले में क्रियान्वित करने की दिशा में पहल करना ।
- अध्ययन अवलोकन के द्वारा व्यावसायिक क्षमता का विकास करना ।

परिचयात्मक भ्रमण (Exposer Visit) कार्यक्रम का क्रियान्वयन–

इस कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए उत्तराखण्ड राज्य का चयन किया गया है जहाँ अशासकीय संस्थाओं के सहयोग से संकुल, विकासखण्ड तथा जिला स्तर पर निम्नांकित संदर्भों में अनुभवों का आदान–प्रदान किया जाना प्रस्तावित है–

- शिक्षा के अधिकार कानून के आलोक में सामुदायिक सहभागिता और शिक्षा में समुदाय की भूमिका को समझना।
- गुणात्मक शिक्षा और सामुदायिक सहभागिता के लिए डाईट नगरी (धमतरी,छत्तीसगढ़) में किए जा रहे प्रयासा को लोगों के समक्ष प्रस्तुत कर उनके विचारों से अवगत होना।

- संकुल स्तर पर शैक्षिक अनुसमर्थन प्रणाली को समझना तथा उनकी दक्षता विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों और रणनीति से अवगत होना।
- संकुल–विकासखण्ड–जिले के मध्य समन्वयन प्रणाली पर सभी स्तर के अकादमिक एवं प्रबंधन के लोगों से चर्चा करना, उनके अनुभवों एवं चुनौतियों को समझना।
- डाईट में संचालित सेवाकालीन तथा सेवापूर्व प्रशिक्षण पर किए जा रहे कार्यों का समझना।
- अनुभवों का आदान प्रदान करते हुए जिले की शैक्षिक स्थिति को बेहतर बनाने के लिए रणनीति निर्माण में उनके अनुभवों को शामिल करना ।

कार्ययोजनाः–

- **भ्रमण का समय**– अक्टूबर – दिसम्बर 2012 के मध्य
- **भ्रमण की अवधि**– 6 कार्य दिवस
- **भ्रमण समूह का आकार**– 15 प्रतिभागी
- **प्रतिभागीगण**– डाईट के संकाय सदस्य, संकुल शैक्षिक समन्वयक, विकासखण्ड स्रोत समन्वयक, विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी, जिला परियोजना समन्वयक, एस.एस.ए., जिला शिक्षा अधिकारी तथा सहायक आयुक्त, आदिम जाति कल्याण विभाग।

बजटः–

क्र.	मद	राशि	कुल बजट
1	भोजन (चाय, नास्ता, दोपहर का भोजन रात का भोजन) यात्रा दिवस को शामिल कर	200 x 15 x 10 Days = 30000.00	30000.00
2	आवास खर्च	500x 15 x 6 Days = 45000-00	45000.00
3	यात्रा खर्च (धमतरी से रायपुर, रायपुर से दिल्ली, दिल्ली से उत्तर काशी तक तथा वापसी)	5000 x 15 Persons = 75000.00	75000.00
4	स्थानीय यातायात खर्च 6 दिवस के लिए 15 व्यक्ति, प्रति व्यक्ति	3 Vchicle x 3300 x 6 Days = 59400.00	59400.00
5	शैक्षिणिक सामग्री स्टेशनरी एवं प्रिंटिंग	50 x 15 = 7500.00	7500.00
6	आकस्मिक व्यय	5600.00	5600.00
	कुल राशि	-	2,22,500.00

(दो लाख बाईस हजार पांच सौ रूपए मात्र)

योजना क. 06 :–

गणित शिक्षण कार्यशाला :स्रोत व्यक्ति तैयार करना :–(प्राथमिक शिक्षकों के लिए)

कक्षागत प्रक्रियाओं में बदलाव लाने और गणित के बेहतर संदर्भ सदस्य तैयार करने की दिशा में एक पहल ।

परिचयः–

जन्म लेने के बाद से स्कूल आने तक बच्चा अपने रोजमर्रा की जिंदगी में जाने–अनजाने ही सही पर गणित का सामना रोज करता है। जैसे चीजों को जमाना, अलग–अलग रखना, मिलाना, वस्तुओ को सजाना, बांटना, कम–ज्यादा पहचानना, छोटा–बडा पहचानना आदि। लेकिन जब वही बच्चा स्कूल में प्रवेश करता है और इन्ही अवधारणाओ को स्कूल में पढाया जाता है तब उस अवधारणाओ को समझने में बच्चो को बहुत सारी कठिनाई क्यों आती हैं? प्राथमिक शिक्षा पूरी कर लेने के बावजूद भी बच्चों के सीखने के स्तरों में अपेक्षित इजाफा देखने को क्यो नही मिल पाता है? यह मुख्य चिंता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 के अनुसार इन समस्याओं के कारण पाठ्यपुस्तक केन्द्रित व बच्चे के संदर्भ से कटी हुई गणित शिक्षण की प्रक्रियाएं, शिक्षक–शिक्षिकाओं की अपर्याप्त तैयारी, गणित व गणित के स्वभाव की समझ तथा गणितीय अवधारणाओं और शिक्षण की तकनीकों में जुड़ाव की कमी आदि के रूप में दिखाई देते हैं। वर्तमान गणित शिक्षण के इस परिदृश्य में बदलाव लाने और गणित के बेहतर संदर्भ सदस्यों की तैयारी के लिए 40 शिक्षकों के एक समूह के साथ एक कार्यशाला प्रस्तावित है।

उद्देश्यः–

उपराक्त बातो को ध्यान में रखकर इस कार्यशाला की योजना बनाई गई है, जिसके उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1. गणित की प्रकृति को समझना ।
2. गणित शिक्षण के उद्देश्यों को समझना।
3. संख्या पूर्व अवधारणाआ का विकास करना ।
4. गणना का मतलब और गणना की प्रक्रिया को समझना ।

5. संख्या पद्धति को समझना।
6. स्थानीयमान की समझ विकसित करना ।
7. दैनिक गतिविधियों के माध्यम से गणित को समझने के तरीकों की जानकारी देना।

रणनीतिः–

1. शिक्षको की रुचि के अनुसार 40 प्राथमिक शिक्षकों का चयन करना ।
2. शिक्षकों के लिए 'संख्या पद्धति' पर कार्यशाला का आयोजन करना ।
3. पठन सहायक सामग्रियो का चयन करना ।
4. गतिविधि के लिए सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण करना ।
5. शिक्षकों के लिए प्रदत्त कार्य; परियाजना कार्य तैयार करना जिसे स्कूल /कक्षा के दौरान पूर्ण करना होगा ।
6. विभिन्न अवधारणों पर समझ बनाने के लिए गतिविधियों का निर्माण करना।
7. गणित शिक्षण हेतु रोचक गतिविधियों का चयन करना ।

कियान्वयन :–

40 प्राथमिक शिक्षकों की **06 दिवसीय** आवासीय कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा । इस कार्यशाला में निम्नलिखित विषयों पर कार्य किया जाएगा–

1. वर्तमान में चल रही कक्षागत गतिविधिया पर चर्चा ।
2. बच्चो को पढाते समय आने वाली समस्याओ पर चर्चा तथा प्रयोगात्मक कार्य ।
3. गणित की प्रकृति पर चर्चा ।
4. संख्या पूर्व अवधारणा के विकास पर चर्चा
5. गिनती करना और गिनती की प्रक्रिया पर चर्चा तथा कार्य करना ।
6. अंक ,संख्या व संख्याक पर।
7. स्थानीय मान की समझ पर।
8. भिन्न की अवधारणा पर चर्चा तथा शिक्षण सामग्री का निर्माण
9. रेखागणित को खेल –खेल में समझने हेतु गतिविधियों पर चर्चा तथा गतिविधियों का निर्माण ।
10. गणित शिक्षण और आंकलन ।

इस कार्यशाला के बाद प्रतिभागीः–

1. गणित की प्रकृति को समझते हुए पढाते समय गणित की प्रकृति की भूमिका को समझ पाएंगे
2. संख्या पूर्व अवधारणाओ से संबंधित गतिविधियो की जरुरतों को महसूस कर पाएंगे
3. गिनती का मतलब व प्रक्रिया को समझ पाएंगे ।
4. बच्चो के सामने स्थानीय मान को कैसे प्रस्तुत किया जाए, इसे समझ पाएंगे ।
5. खेल –खेल में रेखागणित की अवधारणा को बच्चों तक ले जाने में सफल होंगे ।
6. भिन्न की अवधारणा को बच्चों के स्तर तक ले जाने में सफल होंगे ।
7. आगामी सत्रों में आयोजित होने वाले सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षणों में सक्रिय संदर्भ सदस्यों की भूमिका का निर्वाह कर पाऐंगे।

बजटः–

40 +02 – 45 व्यक्तियों के लिए

क्रं	यात्रा देयक	चाय नाश्ता भोजन 45X110 X6	स्टेशनरी 45X25	आकस्मिक व्यय 45X25X6	मानदेय 02X300X6	सामग्री निर्माण	योग
1	16000	29700	1125	6750	3600	3000	60175

(साठ हजार एक सौ पचहत्तर रूपए मात्र)

||||||||

योजना क.07

क्रिएटिव्ह साइंस अधिगम :विज्ञान शिक्षण कार्यशालाः–

स्रोत व्यक्ति तैयार करना

(धमतरी विकासखण्ड के लिमतरा में विज्ञान विषय पर कार्य करने के बाद बच्चों में आए बदलाव के बाद इस कार्य योजना का निर्माण किया जा रहा है)

परिप्रेक्ष्यः–

सीखने सिखाने के वर्तमान परिदृश्य में विज्ञान शिक्षण को ले कर जो मान्यताऐं अभी दिखाई पड़ती है वह उत्साहवर्धक तो नहीं कही जा सकती है। इस प्रक्रिया में विषय की प्रकृति के समझ का अभाव कक्षागत प्रक्रिया में यांत्रिकता के रूप में साफ देखा जा सकता है जहां परिभाषाओं को याद करने, प्रयोगों को या तो याद करना या फिर प्रयोग केवल करने के लिए करना या केवल लिखना, वह भी केवल पास होने के लिए , परंपरागत सवालों को ही याद करना आदि असामान्य नहीं है।

एन.सी.एफ यह स्वीकार करता है कि अब तक विज्ञान शिक्षण को लेकर एक गलतफहमी है कि विज्ञान खोजों और तकनीकी ज्ञान का पुलिंदा है। वास्तव मे विज्ञान एक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से किसी घटना को समझा जा सकता है। विज्ञान एक सोचने का तरीका है जिसके माध्यम से प्रकृति और उन तमाम घटनाओं को जो स्वयं से जुड़ी हुई हैं उन्हें समझा जा सकता है। यह विडंबना ही कहें कि छोटी कक्षाओं से हमारी विज्ञान शिक्षा विद्यार्थियों को वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दों को रटने को बाध्य करती है। जबकि फोकस यह होना चाहिए कि विद्यार्थियों में विज्ञान की प्रक्रिया की समझ पैदा हुई है या नहीं इस बात को जांचना परखना है । प्रसिद्ध भौतिकशास्त्री फाईनमैन ने अपने एक लेख में कहा है कि 'असल विज्ञान शिक्षण वह है जिसमें कि विद्यार्थियों को विज्ञान की प्रक्रियाओं से परिचित होने के अवसर मिलें।'

एन.सी.एफ यह भी अनुशंसा करता है कि विज्ञान को संज्ञान के बजाए एक क्रिया के रूप में देखना चाहिए। विज्ञान महज जानकारी का पुलिंदा नहीं बल्कि सोचने और सक्रिय होने का एक तरीका है। ऐसा तरीका जिससे सोचने की क्षमता विकसित हो और जिसमें विज्ञान क खुले दिमाग वाला रवैया भी शामिल हो।

खोजने के दौरान ज्ञान और अवधारणाएं एक प्रक्रिया के तहत ही विकसित होतो है। इन्हीं प्रक्रियाओं और कौशलों के द्वारा ही लोग समस्याओं का अध्ययन करते हैं और वैज्ञानिक दृष्टिकोण की समझ हासिल होती है।

विज्ञान शिक्षण के उद्दश्यः–

- विज्ञान क्या है तथा वह प्राकृतिक वातावरण को जानने एवं समझने में कैसे हमारी मदद करता हैं, इस पर समझ बना सके।
- बालक अपने स्तर के अनुरूप वैज्ञानिक तथ्यों, सिद्धांतों एवं उनके अनुप्रयोगों को जान सके।
- उसमें वातावरण को जानने के लिए संवेदनशीलता एवं जिज्ञासा का प्रादुर्भाव हो सके।
- वातावरण एवं जीवन के गहरे समन्वय को समझ सके व वातावरण के संरक्षण के प्रति सजग हो सके।
- वैज्ञानिक जांच द्वारा किसी विचार (मान्यता, नियम और सिद्धांत) के प्रमाणीकरण (proves) अथवा अप्रमाणीकरण (disproves) की प्रकृति को समझ सकें।
- ज्ञान का सृजन, निर्माण, समझ, समस्या समाधान, अन्वेषण का कौशल, तार्किक सोच और प्रयोगों के आधार पर निष्कर्ष निकालने की क्षमता का विकास करना।
- सामान्यीकरण पर पहुंचने की योग्यता का विकास करना तथा इसका दैनिक समस्याओं के हल में अनुप्रयोग करना।
- विज्ञान के खोजों के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को जानना तथा विज्ञान और समाज में अन्तर्संबंधों की समझ का विकास करना।
- आसपास में घटने वाली घटनाओं के कारण कार्य संबंध को समझ पाना ।
- व्यक्तियों में सृजनात्मकता के प्रति रूचि जागृत करना तथा विज्ञान में नवाचारों के लिए प्रेरित करना।

विज्ञान शिक्षण कार्यशाला के उद्देश्यः–

विज्ञान विषय की प्रकृति को समझना उपरोक्त उद्येश्यों को प्राप्त करने में मददगार साबित होती है। विषय की प्रकृति जहां हमारी कक्षागत प्रकिया को विषय तथा समझ अनुरूप बनाने में मदद करती है वहीं विज्ञान को प्रयोगशाला से बाहर भी रोजमर्रा की जिंदगी में देखने तथा समझने के सोपान सुझाता है। यह कार्यशाला हमें विषय की प्रकृति को समझने तथा तदनुरूप अवधारणात्मक समझ बनाने में बच्चों के साथ काम करने तथा आकलन में भी महत्वपुर्ण बदलावों हेतु सक्षम बनाता है। इस कार्यशाला का एक दूसरा

उद्येश्य स्वयं को तथा बच्चों को भी विज्ञान पढ़ने/पढ़ाने के साथ इसके उद्येश्यों की सार्थकता को जीवन के और क्षेत्रों में देख पाये।

कार्यशाला के प्रस्तावित कार्यः–

- इस कार्यशाला के लिए लगभग **40 शिक्षकों** का चयन किया जाना है जो उनके रूचि के अनुसार होगा।
- यह कार्यशाला कुल **4 दिनो** के लिए आयोजित होनी है।
- कार्यशाला में विज्ञान की प्रकृति को ले कर अलग अलग गतिविधियों के द्वारा विषय की समझ बनाने पर कार्य किया जाना प्रस्तावित है।
- इन गतिविधियों में कुछ काल्पनिक कहानियों पर काम, विज्ञान की अपेक्षाओं को प्रयोगशाला के बाहर भी देख पाना जैसे उद्येश्यों में काम, विज्ञान में ऐतिहासिकता के महत्व को समझ पाने पर कार्य, कुछ प्रयोगों को करते हुए विषय की प्रकृति को समझने पर कार्य, प्रयोगों के विरोधाभाषों का समझ पाने पर कार्य जैसे यह केवल महंगे उपकरणों से ही संभव है, प्रयोगों के लिए स्थानीय संसाधनों के उपयोग आदि पर कार्य करना।
- कार्यशाला हेतु कुछ पठन सामग्री का चयन एवं अध्ययन।
- किसी अवधारणा पर शिक्षकों/बच्चों के अनुभव जानने पर कार्य।
- प्राथमिक स्तर की अवधारणाओं के लिए प्रायोगिक कार्य का निर्धारण तथा प्रयोग करना ।
- स्थानीय दैनिक गतिविधियों में विज्ञान ।
- प्राथमिक कक्षाओं के लिए प्रायोगिक गतिविधियों का निर्धारण करना ।

कार्यशाला से संभावित समझः–

- कार्यशाला के बाद शिक्षक विषय की प्रकृति के अनुरूप कक्षागत प्रकिया अपना पायेंगे।
- विज्ञान की अपेक्षाओं को रोजमर्रा के जीवन से भी जोड़ पायेंगे।
- विज्ञान में प्रयोगों की महत्ता को समझ पायेंगे।
- प्रोजेक्ट आधारित शिक्षण सुनिशिचित कर पाएंगे।

- विज्ञान में प्रयोगों हेतु स्थानीय संसाधनों के उपयोग को समझ पायेंगे।
- ऐतिहासिकता तथा समाज के जुड़ाव को वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अभिन्न अंग के रूप में देख पायेंगे।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण के सभी पहलुओं यथा सृजनात्मकता, जिज्ञासा, सवाल करने की प्रेरणा, तार्किक सोच, अण्वेषण की प्रवृति, संवेदनशीलता, समस्या समाधान इत्यादि का बच्चों में यथास्तर विकास कक्षागत प्रकिया का हिस्सा बना पाना।
- आने वाले शैक्षणिक गतिविधियों यथा प्रशिक्षणों में सकिय संदर्भ व्यक्ति की भूमिका का निर्ववहन करना।

कार्यशाला के लिए अनुमानित बजटः–

क्रं	प्रायोगिक सामग्री	चाय नाश्ता भोजन	स्टेशनरी	आकस्मिक व्यय	मानदेय	यात्रा व्यय	योग
1	5000/–	45x110x4= 19800	1125/	45x25x 4=4500	300x2x4= 2400	18600	51425/

योजना क्र.08
सामाजिक विज्ञान
शिक्षकों में नक्शे की समझ को पुख्ता करनाः–
(स्रोत व्यक्ति तैयार करना)

पिछले साल की भांति इस वर्ष भी जिले के प्राथमिक, उच्च प्राथमिक व हाईस्कूल के चुने हुए 40 शिक्षकों के साथ नक्शे की अवधारणा पर **04 दिवसीय** आवासीय कार्यशाला का आयोजन किया जायेगा। ये शिक्षक कार्यशाला के बाद अपने–अपने स्कूलों में बच्चों के साथ पाठ्यपुस्तकों में दिये गये विभिन्न नक्शों की अवधारणाओं को कक्षा कक्ष में सिखायेंगे। डाइट व सी.ए.सी.द्वारा उन शिक्षकों के स्कूलों में अकादमिक अनुवीक्षण (सहयोग) किया जायेगा।

क्यों करना चाहते है?

हम जानते हें कि नक्शा पढ़ना व बनाना, सामाजिक अध्ययन विषय का एक प्रमुख कौशल है। कौशल वह काबिलियत होता है जो बारम्बार अभ्यास द्वारा विकसित एवं सीमित दायरे में उपयोग करने से आता है। हमने स्कूलों में मॉनीटरिंग के दौरान पाया कि बच्चों व शिक्षकों में नक्शे से संबंधित दिशा, पैमाना व संकेत की समझ का अभाव है।

(सरबदा विकासखण्ड कुरूद के विद्यालय की मॉनीटरिंग के अवसर पर कक्षा 10 वीं एवं 11 वीं पढ़ने वाले छात्रों से विद्यालय में बने हुए नजरी नक्शा के बारे में बातचीत की गई । 10 – 12 बच्चे वहां मौजूद थे लेकिन किसी भी बच्चों को दिशा का भी ज्ञान नहीं था।)

जिले के अन्य विद्यालयों की भी मॉनीटरिंग की गई जहां अधोलिखित बातें सामने आईं –

- बच्चों को 'सीमा' की अवधारणा की समझ काफी कमज़ोर थी। वे नक्शे में समुद्री सीमा व अन्तराष्ट्रीय सीमा रेखा में अन्तर नहीं कर पाते थे। नक्शों में अलग–अलग प्रकार की सीमाओं को दर्शाने के लिए अलग–अलग तरह की रेखाएं उन्हें पूरी तरह भ्रमित कर देती हैं।
- बच्चों को यह समझ में नहीं आता कि शहरों व अन्य स्थलों को नक्शे पर एक बिन्दु से दर्शाया जाता है।
- जब उनसे दो शहरों के बीच की दूरी नापने को कहा गया, तो सम्बन्धित बिन्दुओं के बजाय वे उन शहरों के लिखे नामों के बीच की दूरी नापने लगे।
- जब उनसे यह पता करन को कहा गया कि एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचने के लिए कितनी दूरी तय करनी होगी तो कई बच्चे पैमाने को नहीं पहचान पाए जिसके कारण नक्शे में दिखाई गई दूरी को वास्तविक दूरी में नहीं बदल सके।

कार्यशाला में क्या करने वाले है:–

हम चाहेंगे कि इन चार दिन की कार्यशाला में नीचे लिखित विन्दुओं पर बहुत ही रोचक तरीके की गतिविधियों, सामूहिक चर्चा तथा अभ्यास के द्वारा नक्शों की अवधारणाओं की समझ बनायी जायेगी।

- नक्शा पढ़ना व बनाना – सीखने की जरूरत क्यों?
- नक्शा का इतिहास
- नक्शे पर बातचीत
- नक्शा में जगह की समझ
- दिशा की समझ
- पैमाना का महत्व
- संकेत का उपयोग
- हम नक्शा बनायें
- नक्शा की राजनीति क्या है?

कार्यशाला के बाद प्रतिभागी निम्न क्षमताओं को हासिल कर पायेंगेः–

- नक्शे, नजरी नक्शे, चित्र व फोटोग्राफ के अन्तर की समझ
- दिशा, पैमाना तथा संकेत की गहरी समझ बनाते हुए उसका उपयोग कर नक्शा बना सकना
- तरह–तरह के नक्शों (राजनैतिक, प्राकृतिक, रेल, रोड, ट्रेकिंग व अन्य) का पठन एवं उसका दैनिक जीवन में उपयोग कर सकना
- वास्तविक भौगोलिक जानकारियों का नक्शों के साथ सहसंबंध बना पाना।

यह सब जानने के बाद शिक्षक अपनी कक्षा–कक्ष में नक्शे का शिक्षण बेहतर तरीके से कर पायेंगे साथ ही दैनिक जीवन में भी उसका सार्थक उपयोग कर पायेंगे।

कार्यशाला के लिए अनुमानित बजटः–

क्रं	सामग्री निर्माण हेतु	चाय नाश्ता भोजन	स्टेशनरी	आकस्मिक व्यय	मानदेय	यात्रा व्यय	योग
1	2000	45x110x4= 19800	1125/	45x25x 4=4500	300x2x4= 2400	18600	48424/

(अड़तालीस हजार चार सौ चौबीस रूपए मात्र)

योजना क. 09

स्वदेशी/स्थानीय खेलों का शिक्षा में समावेश

शाला आने के पूर्व बच्चे कई तरह के अनुभव लेकर विद्यालय आते हैं । बच्चों को ये अनुभव अड़ोस –पड़ोस में तथा खेल –खेल में प्राप्त होते हैं । बच्चों को खेल प्रिय भी हैं । यदि उन्हें विद्यालय में भी पर्याप्त मात्रा में खेल का अवसर प्रदान किया जाए और इन खेलों को शिक्षण से जोड़ा जाए तो बच्चे सहज ढंग से सीखेंगे । आज कई तरह के स्वदेशी /स्थानीय खेल विलुप्त होने के कगार पर है । ऐसे खेलों का शिक्षण में समावेश किया जाए तो बच्चे सीखेंगे भी और ऐसे खेल संरक्षित भी होंगे ।

व्यक्ति को अपने व्यक्तिगत एवं सामुदायिक जीवन मे अनेक जिम्मेदारियों का वहन करना होता है, साथ ही स्वस्थ समाज के लिए सामाजिक एवं मानवीय गुणों का विकास भी उनमें आवश्यक है, इसके लिए व्यक्ति का शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ होना निर्विवाद रूप से पहली शर्त है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षा में स्वास्थ्य शिक्षा, शारीरिक शिक्षा तथा योग को समेकित रूप में देखने की आवश्यकता है। और इन सभी को अनौपचारिक तौर पर देखे जाने की भी आवश्यकता है। यहाँ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 का निम्नांकित परिच्छेद का उल्लेख करना वांछनीय होगा–

''अनौपचारिक तौर पर तो योग की पढ़ाई प्राथमिक स्तर से ही शुरू की जा सकती है मगर यौगिक अभ्यास आदि कक्षा छह के बाद ही शुरू किए जाएँ। स्वास्थ्य और स्वच्छता को लेकर बच्चों की शिक्षा का संबंध भी बच्चों के जीवन के व्यावहारिक

पहलुओं से होना चाहिए। स्थानीय स्तर के खेलों को शामिल किए जाने पर ज़ोर होना चाहिए। कम से कम खण्ड स्तर पर विशेष रूप से स्कूल में उपलब्ध स्थान का उपयोग करते हुए प्रतिभाशाली खिलाड़ियों के लिए स्कूल से पहले और बाद में विशेष तौर पर खेल और प्रशिक्षण की सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जानी चाहिए। ऐसा छुट्टियों के दौरान भी संभव हो सकता ह। यह भी संभव है कि खेल–संबंधी सुविधाओं का विकास किया जाए ताकि खाली समय में बच्चे वहाँ बास्केट बॉल, वॉलीबॉल, थ्रो बॉल और स्थानीय खेलों का आनंद उठा सकें।''

उद्देश्य

- बच्चों में शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक विकास में खेलों के महत्व को स्थापित करना।
- विद्यार्थियों में स्वास्थ्य शिक्षा एवं शारीरिक शिक्षा के मूल्यों एवं आदर्शों की प्राप्ति की ओर ध्यान आकृष्ट करना।
- बच्चों में एक–दूसरे के साथ मिलकर रहना, सहयोग करना जैसे मानवीय गुणों का विकास करना।
- साहस, संतुलन, आत्मविश्वास, एवं धैर्य आदि गुणों का विकास करना।
- बच्चों में टीम भावना एवं समूह में कार्य करने की भावना का विकास करना।
- बच्चों के समग्र विकास के लिए खेलों के महत्व को शिक्षा में स्थान देना।

- स्वदेशी स्थानीय खेलों को संरक्षित करना ।
- स्वदेशी स्थानीय खेलों के साथ पाठ्यक्रम को जोड़ना ताकि बच्चे सीख सकें ।

कार्ययोजना–

चयनित संकुल/शालाओं (विकासखण्ड धमतरी, संकुल उरपुटी के दोनो प्राथमिक शाला तथा एक माध्यमिक शाला) के शिक्षकों तथा समुदाय के साथ संयुंक्त रूप से दो मुख्य कार्य प्रस्तावित है–

1. चयनित संकुल/शालाओं के शिक्षकों तथा समुदाय के लिए संकुल स्तरीय कार्यशाला का आयोजन करना। कार्यशाला मुख्य रूप से निम्नांकित तीन बिन्दुओं पर आयोजित की जाएगी–
   - खेलों का शिक्षा में महत्व उसका समावेशन ।
   - स्थानीय–स्वदेशी खेलों का चिन्हांकन ,लेखना तथा प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के शिक्षण मे इनके उपयोग को सुनिश्चित करना ।
   - खेलों में स्थानीय समुदाय की भुमिका पर चर्चा।
   - बतौर नमूना कुछ खेल सामग्री का विकास । स्थल का विकास।
2. चयनित संकुल/शालाओं में समुदाय के सहयोग से खेल का मैदान तैयार करना।
3. समुदाय के सहयोग से स्वदेशी खेलों का शिक्षण म समावेशन करते हुए बच्चों को सीखने का अवसर प्रदान करना ।

कार्यशाला का कियान्वयनः–

संकुल– उरपुटी (विकासखण्ड– धमतरी) के दोनों प्राथमिक शाला एवं एक माध्यमिक शाला

समय– अक्टुबर से दिसम्बर 2012 के मध्य

अवधि– 5 दिवस

प्रतिभागीगण– संकुल के सभी शिक्षक (9) एवं दो गाँवों के समुदाय के समस्त सदस्य (अनुमानित सदस्य संख्या–530)

कार्यशाला के लिए अनुमानित बजटः–

क्रं	संदर्शिका /सामग्री निर्माण हेतु	चाय नाश्ता	स्टेशनरी	आकस्मिक व्यय	मानदेय	यात्रा व्यय	योग
1	10000	530x20x5= 53000/	1125/	5000/	300x2x5= 3000/	3000	75125

(पचहत्तर हजार एक सौ पच्चीस रूपए मात्र)

अनुवर्ती कियाकलाप :–

- इस कार्यशाला के बाद शिक्षक तथा पालक स्वदेशी स्थानीय खेलों का समावेश शिक्षण में करेंगे ।
- अनौपचारिक परिस्थति में पालक बच्चों को खेल में माध्यम से सिखाएंगे ।
- नियमित खेल से बच्चे स्वस्थ रहेंगे ।
- खेल सामग्री तथा खेल मैदान की व्यवस्था पालकों के माध्यम किया जाएगा ।
- कार्यक्रम की सतत् मॉनीटरिंग की जाएगी ।

प्राचार्य
डाइट नगरी
जिला –धमतरी छ.ग.

योजना क.10
कौशल विकासः कला प्रशिक्षण

परिप्रेक्ष्य :–

विद्यालयों में कला शिक्षण के अभाव पर एन.सी.एफ.ने गहरी चिंता व्यक्त की है। बच्चों को रटंत आधारित शिक्षा पर केन्द्रित कर देने से उनकी नैसर्गिक प्रतिभा का दमन अभी तक होता रहा है। निःशुल्क बाल शिक्षा का अधिकार कानून लागू होने से इन नैसर्गिक प्रतिभाओं को आगे लाने का अवसर मिला है । सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के संदर्भ में सह संज्ञानात्मक क्षेत्र पूरी तरह से कला और सृजन पर आधारित है ।

बच्चों का विकास तभी संभव है जब उनमें निहित क्षमता को प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त हो । सतत् एवं समग्र मूल्यांकन ने एक तरह से बच्चों के लिए द्वार खोल दिया है। अब जरूरत इस बात की है कि बच्चों को इन सह संज्ञानात्मक क्षेत्र में आगे बढ़ाया जाए ।

पिछले साल बच्चों के साथ कौशल विकास कार्यक्रम के दौरान यह अनुभव प्राप्त हुआ कि बच्चों में प्रतिभा की कोई कमी नहीं है । कमी है तो सिर्फ उन्हें अवसर देने की । हर बच्चे में कोई न कोई गुण जन्मजात होती है। अतः बच्चों को कौशल विकास के अंतर्गत कला का प्रशिक्षण देना अनिवार्य है जिसकी चिंता एन.सी.एफ.2005 ने जतायी है ।

आवश्यकता :–

जिला स्तर पर मॉनीटरिंग के दौरान यह देखा गया कि विद्यार्थियों में नैसर्गिक रूप से कई कलाएं होती है । अवसर के अभाव में इस तरह की कलाएं कई बार नष्ट हो जाती हैं । जिन विद्यार्थियों को सुअवसर प्राप्त होता है वे आगे बढ़ जाते हैं और जिन्हें आगे बढ़ने का अवसर नहीं मिलता वे पीछे हो जाते हैं ।

वर्तमान में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में कला का शिक्षण एक तरह से बच्चे के हित में हैं । अभी तक हम उनकी रूचियों के विपरीत अध्ययन करने हेतु विवश करते थे । सतत् एवं व्यापक में बच्चों की रूचियों को ध्यान में रखते हुए उसे उसी क्षेत्र में आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध उपलब्ध कराने हैं ।

उद्देश्य :–

1 बच्चों में निहित नैसर्गिक कला का प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करना ।

2 अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करना ।

3 प्रतिभा प्रदर्शन का सशक्त माध्यम है

4 सृजन क्षमता का विकास

5 व्यक्तित्व विकास में सहायक विधा ।

6 एन. सी. एफ. 2005 की अनुशंसा की पूर्ति हेतु ।

7 शांति एवं–सौन्दर्य बोध के लिए कला शिक्षण अनिवार्य है।

8 पाठ्यक्रम में कला शिक्षण को स्थान देने के लिए ।

9 सह –संज्ञानात्मक क्रियाकलापों के सफल क्रियान्वयन हेतु ।

10 संवेदन शीलता–प्रशंसा एवं आत्मशांति के लिए सहायक विधा

11 अभिव्यक्त क्षमता का विकास

12 व्यवसायिक रोजगार में सहायक विधा

13 सहायक सामग्री के रूप में उपयोगी विधा

14 कौशलात्मक ज्ञान सृजन की दिशा में सहायक

महत्व :–

यदि हम अपने पाठ्यक्रम में कला शिक्षण को स्थान नहीं देते हैं तो कई कलाएं ऐसी हैं जो विलुप्त होने के कगार पर है । अतः ऐसी कलाओं के संरक्षण हेतु कला शिक्षण को महत्व देने की जरूरत है।

कला विधा का चिन्हांकन :–

1 मूर्ति कला

2 गायन

3 अभिनय

4 कागज कला

5 चित्रकला

6 नृत्यकला

7 काष्ट कला

8 बांस कला आदि

इनमें से चार कलाओं पर प्रशिक्षण किया जावेगा । पहले चरण में मूर्ति कला एवं गायन कला पर तथा दूसरे चरण में कागज कला एवं अभिनय पर ।

कार्य योजना :–

एक चरण के लिए कुल सहभागी 40 । प्राथमिक तथा माध्यमिक से 20–20 । प्रथम चरण की भांति दूसरे चरण में भी 40 सहभागी होंगे ।

प्रशिक्षण की अवधि 04 दिवस दो चरण मिलाकर 08 दिन ।

प्रशिक्षण के बिन्दु :–

1 कला क्या है ?

2 बच्चे और कला का संबंध ?

3 हमारे आसपास की कलाऐं ?

4 पाठ्यक्रम में कला शिक्षा का स्थान क्यों और कैसे ?

5 मूर्ति कला एवं गायन कला क्या है ?

उपरोक्त बिन्दुओं पर चर्चा परिचर्चा कर शिक्षकों को मूर्ति कला एवं गायन कला का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा । शिक्षकों को उनकी रूचि के अनुरूप दो दिवस मिट्टी का कार्य सिखाया जाएगा । शेष दिवस गायन सिखाया जाएगा जिसमें देश भक्ति गीत , राष्टगान , राष्टीय गीत , लोक गीत , अंतर प्रादेशिक गीत सिखाया जाएगा ।

इस कार्यशाला में शिक्षक :–

- कला को समझेंगे ।
- पाठ्यक्रम में कला शिक्षण के महत्व को समझेंगे ।
- पाठ्यक्रम में कला शिक्षण को शामिल करने के बारे में समझ बना पाएंगे ।
- कक्षा शिक्षण के दौरान कला का उपयोग कर सकेंगे ।
- सह–संज्ञानात्मक क्षेत्र के क्रियान्वयन में बच्चों की मदद कर सकेंगे ।
- बच्चों में निहित प्रतिभा को आगे लाने में सहायता कर सकेंगे ।

  उपरोक्तानुसार अन्य 02 कला विधा कागज कला तथा अभिनय कला का भी प्रशिक्षण दिया जाएगा ।

कार्यशाला हेतु संभावित बजट :–

प्रति. संख्या	मदवार व्यय						
40+40+4	स्टे.	चाय नाश्ता	यात्रा एवं	आक.व्यय	मानदेय	सामग्री	महायोग

कुल 84		एवं भोजन 110 प्रति व्यक्ति प्रति दिवस	मॉनीटरिंग	25 / प्रति व्यक्ति प्रति दिवस	300 प्रति दिवस	निर्माण हेतु	
84	2100	36960	30000	8400	4800	4000	86200

(छियासी हजार दो सौ रूपए मात्र)

प्राचार्य
डाइट नगरी
जिला –धमतरी छ.ग.

योजना क. 11

एक्टिव्ह लर्निंग मेथ्डोलॉजी :–

(प्रायोगिक कार्यशाला)

एन.सी.एफ. में इस बात का स्पष्ट उल्लेख है कि शिक्षा बिना बोझ की हो । निःशुल्क एवं बाल शिक्षा का अधिकार कानून ने तो इसे और भी स्पष्ट कर दिया कि बच्चे को तनाव मुक्त शिक्षा दी जाए ।

कक्षा में सीखने–सिखाने की परिस्थितियां उत्पन्न करने की जिम्मेदारी शिक्षक की होती है । यदि कक्षा में सोखने–सिखाने की परिस्थितियां उत्पन्न हो, तो निश्चित ही बच्चे सीखेंगे । अभी कक्षा की गतिविधियो को देखे तो अलोकतांत्रिक तरीके से शिक्षण कार्य हो रहा है । कक्षा में शिक्षक का तरीका हर बच्चे को प्रेरित नही करता । हर बच्चे को सीखने का अवसर नही मिलता। बच्चे समूह में शिक्षण कार्य करते हुए नजर नही आते शिक्षक भी वही पुराने तरीके से शिक्षण कार्य करते चले आ रहे है । बस रटवाने पर बल दिया जाता रहा है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि बच्चे परस्पर एक दूसरे से भी नहीं सीख पा रहे हैं । कक्षा का वातावरण नीरस सा हा जाता है। अतः ए.एल.एम. के आधार पर शिक्षण करने की जरूरत है।

उपरोक्त बातों कों ध्यान में रखकर इस योजना का निर्माण किया गया है । इसके अंतर्गत

1 हम अपनी कक्षाओं में ऐसी कौन सी प्रक्रिया अपनाएं कि बच्चे अपने आप शिक्षक की अनुपस्थिति में भी सीखते रहें ।

2 हमारे सिखाने की योजना कैसी हो कि बिना किसी अतिरिक्त प्रयास के बच्चों की उपलब्धि में सत्त एवं व्यापक सुधार होता रहे।

3 हमारी शालाओं में अध्ययन–अध्यापन इस तरह से हो कि सभी बच्चे हमारी शालाओं में सीखते हुए आगे बढें ।

4 हमारे द्वारा अपनाई जा रही नवीन प्रविधि से बच्चे सीख पा रहे ह , ऐसा विश्वास पालक एवं समुदाय के लोग कर सकें ।

5 बच्चों को इस तरह से अवसर प्रदान किए जाएं कि बच्चे परस्पर सीख सकें

6 परस्पर सीखते हुए बच्चे अपने शिक्षको से बिना झिझक के अपनी शंकाओं का समाधान कर सकेगें ।

7 शिक्षकों का बच्चो के साथ बेहद मधुर संबंध होगा और बच्चों को उनसे अपनी जिज्ञासाएं शांत करने के लिए कोई झिझक नही होगी ।

उद्देश्य :–

इस योजना के अधोलिखित उद्देदश्य है । :–

1 कक्षा में सीखने–सिखाने की परिस्थितियां उत्पन्न करना ।

2 बच्चो को स्वयं करने सीखने का अवसर प्रदान करना ।

3 बच्चो को समूह चर्चा, समूह म कार्य करने के लिए प्रेरित करना ।

4 सीखे हुए ज्ञान को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करना ।

5 बच्चों से माइंड मैप का निर्माण करना ।

6 कक्षा में एक लोकतांत्रिक व्यवस्था करना ।

7 बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु एक वातावरण का निर्माण करना ।

8 शिक्षक, पालक एवं बच्चों के समन्वित प्रयास से बेहतर ‘ शैक्षिक वातावरण का निर्माण करना ।

9 बच्चों कों रटन्त प्रणाली से मुक्त करने की दिशा में एक पहल करना ।

10 बच्चे तथा शिक्षक को सक्रिय रखना ।

चयनित विकासखण्ड–नगरी संकुल केन्द्र–बेलरगांव

इस योजना का क्रियान्वयन नगरी विकासखण्ड के संकुल केन्द्र बेलरगांव में किया जाएगा

माध्यमिक शालाओं की संख्या – 06

हाई स्कूल – 02

शिक्षकों की कुल संख्या – 40 शिक्षक

बच्चो की कुल संख्या – 600

चयनित विषय :– समस्त विषय –

बेसलाईन सर्वे :–

सर्वप्रथम नगरी विकासखण्ड के संकुल केन्द्र बेलरगांव समस्त विद्यालयों में समस्त विषय को पढ़ाने के तरीके, बच्चों के सीखने का स्तर, शिक्षक तथा बच्चों की प्रतिक्रिया पर बेस लाईन सर्वे किया जाएगा । यह कार्य उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षाओं का अवलोकन , शिक्षक तथा बच्चों से चर्चा परिचर्चा कर किया जाएगा ।

टेस्ट का आयोजन :–

सर्वप्रथम बच्चो के स्तर को जानने के लिए टेस्ट का आयोजन किया जाएगा । यह कक्षा 06 स 08 तक के बच्चों के लिए टेस्ट का आयोजन किया जाएग । टेस्ट से प्राप्त आंकड़ो का विश्लेषण किया जाएगा ।

बजट :–

क्र.	म्द						
		चाय नास्ता एवं भोजन	स्टेशनरी एवं प्रपत्रों के प्रिटिंग में व्यय	आकस्मिक व्यय	आवास	यात्रा देयक	योग
01			4000	2000		2000	8000

रणनीति एवं कियान्वयन :–

- शिक्षकों के लिए ए.एल.एम. पर कार्यशाला का आयोजन करना ।
- पाठों के आधार पर ए.एल.एम.की प्रविधियों का चयन करना ।
- प्रविधियों के आधार पर कक्षा शिक्षण
- विषयवार प्रविधियों का निर्धारण तथा उसके अनुरूप पाठ का प्रदर्शन
- बच्चों में शिक्षण अधिगम सामग्री के साथ पूर्णतः गतिविधि आधारित शिक्षण सुनिश्चित करना ।
- शिक्षक तथा बच्चों से माइंड मैप एवं टी.'एल.एम का निर्माण करना ।
- बच्चों के द्वारा निर्मित माइंड मैप का कक्षा में प्रदर्शन एवं टी.एल.एम. का कक्षा में प्रदर्शन ।
- ए.एल.एम. सप्ताह का आयोजन।
- समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करना ।
- एक्सपोजर विजिट परस्पर एक दूसरे की शालाओं में ।

कार्यशाला का आयोजन 05 दिवस दो चरण में :–

सर्वप्रथम शिक्षकों के लिए 05 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा । यह कार्यशाला दो चरण में किया जाएगा । प्रथम चरण संकुल के आधे शिक्षक को तथा दूसरे चरण में शेष बच्चे शिक्षक को कार्यशाला में शामिल किया जाएगा । इस कार्यशाला में अधोलिखित बातों पर चर्चा परिचर्चा की जावेगी –

1 वर्तमान में चल रही कक्षागत गतिविधि ।

2 क्या वर्तमान कक्षा में बच्चों को सोखने का प्रर्याप्त अवसर मिलता है ?

3 क्या बच्चे परस्पर सीख पाते हैं ?

4 क्या बच्चों को अभिव्यक्त का प्रर्याप्त अवसर मिल पाता है ?

5 क्या शिक्षण कार्य बच्चों के अनुभव पर आधारित है ?

6 कक्षा का वातावरण किस तरह का हो?

7 कक्षा में शिक्षक तथा बच्चे कैसे सक्रिय हों ?

8 ए.एल.एम.की प्रविधियां के आधार पर कक्षा शिक्षण ।

9 समूहवार माइंट मैप का निर्माण करना ।

10 निर्मित सामग्री का समूह में प्रदर्शन करना ।

बजट :–

प्रतिभागी प्रति चरण 40 सहभागी जिसमे 20 शिक्षक तथा 20 बच्चे होंगे 06 मास्टर ट्रेनर्स	मद					
	चाय नास्ता एवं भोजन	स्टेशनरी	आकस्मिक व्यय	मानदेय 300x6x5	यात्रा देयक एवं मॉनीटरिंग	योग
	25800	2150	10750	9000	7000	54700

कुल संभावित व्यय(बैसठ हजार सात सौ रूपए मात्र)

योजना क.12

कार्यानुभव + प्रायोजना आधारित प्रशिक्षण :–

डी.एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत कार्यानुभव एक बहुत महत्वपूर्ण प्रकोष्ठ है। इस प्रकोष्ठ का मतलब है कि छात्राध्यापक प्रशिक्षण अवधि में बहुत सारे कार्य का अनुभव लें तथा शिक्षक बनने के बाद बच्चों में भी कार्य संस्कृति विकसित करें । एक तरह स कार्यानुभव के माध्यम से बच्चों जीवन के लिए तैयार करता है।

एन.सी.एफ.की मंशा है कि बच्चों को उनके परिवेश के आधार पर सीखने का अवसर दिया जाए तो बच्चे बेहतर ढंग से सीखेंगे । इस दिशा में प्रोजेक्ट बेस लर्निंग एक बहुत ही कारगर तरीका हो सकता है।

प्रोजेक्ट को लेकर हमारे शिक्षकों में कई तरह की धारणाएं हैं । आम तौर पर शिक्षक यह मानते हैं कि प्रोजेक्ट केवल विज्ञान में ही संभव है दूसरे विषय में नहीं । यह धारणा गलत है । आज शिक्षण के क्षेत्र में प्रोजेक्ट की मांग बढ़ कई है । इसकी आवश्यकता इन कारणों से है।

आवश्यकता :–

- प्रोजेक्ट बेस लर्निंग से बच्चों को स्वयं करके सीखने का अवसर प्राप्त होता है।
- बच्चे अपने अनुभवों को शामिल करते हैं ।
- बच्चे सक्रिय होकर सीखते हैं ।
- परिवेश में उपलब्ध संसाधन का सदुपयोग होता है।
- प्रोजेक्ट बेस लर्निंग समझ आधारित सीखने पर बल देता है।
- विद्यालय के लिए शिक्षण अधिगम सामग्री निर्मित हो जाती है।

अतः उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर डी.एड.प्रथम वर्ष के छात्राध्यापकों के लिए कार्यानुभव तथा प्रोजेक्ट कार्यालय हेतु योजना का निर्माण किया गया है।

इस कार्यशाला के अधोलिखित उद्देश्य हैं –

- छात्राध्यापकों को कार्य संस्कृति से जोड़ना ।
- सेवा पूर्व प्रशिक्षण में सीखने अवसर प्रदान करना ।
- छात्राध्यापकों के माध्यम से डाइट के लिए एक स्रोत संदर्भ सामग्री का निर्माण करना ।

- छात्राध्यापकों को करने सीखने का अवसर देना ताकि वे सेवा में आने के बाद विद्यालय में इसका बेहतर उपयोग कर सकें ।
- अनुभव आधारित सीखने के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध कराना ।

किन –किन विषयों को शामिल किया जाएगा –

1 हस्तकला – हचित्रकला, मूर्तिकला, बासकला, जुटकला, मिट्टोकला, रंगोली, लोकहस्तकला, ब्यूटी पार्लर

2 गायन

3 अभिनय

4 प्रोजेक्ट कार्य विषयगत

5 विषयगत माडल निर्माण

6 कागजकला

7 लोककला – पुतरा, पुतरी, चित्रकारी, गायन, नृत्य, अभिलेख, लोक कथाओं को संकलन आदि ।

कार्यशाला :–

कुल छात्राध्यापक 100

कुल 07 दिवस

दो चरण में

क्या होगा इस कार्यशाला में :–

छात्राध्यापकों को कार्यानुभव के बारे में जानकारी दी जाएगी । उन्हें यह भी बताया जाएगा कि यह प्रशिक्षण का एक बहुत महत्वपूर्ण हिस्सा है । कार्यशाला में उपरोक्त चिह्नित विषयों को सिखाया जाएगा । छात्राध्यापकों के समक्ष प्रोजेक्ट के नमूने भी प्रस्तुत किए जाएंगे जिसके आधार पर प्रोजेक्ट कार्य कर सकें ।

अनुवर्ती किया कलाप :–

कार्यशाला के बाद छात्राध्यापकों को विषय देत हुए उसे पूरा करने के लिए 15 दिवस का अवसर दिया जाएगा । छात्राध्यापक 15 दिवस में दिए गए कार्यों को पूर्ण करेंगे

। छात्राध्यापकों के द्वारा निर्मित सामग्री पर चर्चा परिचर्चा की जाएगी । इन सामग्रियों का उपयोग छात्राध्यापक ‘ शालेय शिक्षण अनुभव के दौरान विद्यालय में करेंगे । छात्राध्यापकों को निर्देश दिया जाएगा कि वे विद्यालय में भी बच्चों के द्वारा इसी तरह की सामग्री बनवाते हुए उन्हें सीखने का अवसर प्रदान करें ।

बजट :–

कुल प्रतिभागी	मदवार व्यय				
100+06	चाय नास्ता 106x20	स्टेशनरी एवं सामग्री 25 / प्रति छात्रा.	सामग्री हेतु	मानदेय 300x6x7	योग
	14840	2650	10000	12600	40090

प्राचार्य
डाइट नगरी
जिला–धमतरी छ.ग.

योजना क.– 13

प्रोग्राम ऑफ एक्शन कमेटी की मासिक बैठक :–

एन.सी.टी.के निर्देशानुसार डाइट नगरी जिला धमतरी में प्रोग्राम ऑफ एक्शन कमेटी की नियमित रूप से गठन किया जाएगा । तथा इस कमेटी की मासिक बैठक प्रति माह सुनिश्चित की जाएगी । इस कमेटी में अधोलिखित सदस्य होंगे –

- कलेक्टर
- विश्वविद्यालय से 01 सदस्य
- मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत
- जिला शिक्षा अधिकारी
- सहायक आयुक्त आदिम जाति कल्याण विभाग
- जिला परियोजना समन्वयक आर.जी.एस.एम.
- चारों विकासखण्ड के बी.ई.ओ.बी.आर.सी.
- 02 प्रधान पाठक
- 02 अशासकीय संस्थान् के सदस्य

मासिक बैठक :–

इस मासिक बैठक में जिले की शैक्षिक गुणवत्ता के किए गए प्रयासों पर चर्चा / क्रियान्वयन हेत रणनीति का निर्माण तथा अनुवर्ती क्रियाकलापों के रणनीति का निर्माण किया जाएगा ।

संभावित व्यय :–

प्रतिभागी 25 कुल बैठकों की संख्या 09 प्रति माह	**चाय नास्ता एवं भोजन 25x60x9**	**आकस्मिक व्यय प्रति बैठक 1000**	**यात्रा देयक प्रति बैठक 5000/**	**योग**
	13500	**9000**	**45000**	**67500**

(सड़सठ हजार पांच सौ रूपए मात्र)

प्राचार्य

योजना क्र. 14

सफलता की कहानियों का संकलन एवं प्रकाशन :–

शिक्षा के क्षेत्र में जिला स्तर पर शिक्षक , बच्चे या समुदाय के द्वारा किए गए बेहतर कार्य , नवाचारों को संकलन कर सफलता की कहानियों के रूप में संकलित कर प्रकाशित करते हुए जिले के समस्त विद्यालयों में भेजा जाएगा ।

आवश्यकता :–

- इससे अच्छे कार्यों का प्रचार प्रसार होगा ।
- शिक्षक पालक तथा बच्चों में बेहतर कार्य करने की प्रवृत्ति बढ़ेगी ।
- परस्पर सीखने का अवसर मिलेगा ।
- प्रशिक्षणों में स्रोत सामग्री के रूप में उदाहरण स्वरूप प्रयुक्त होगा ।
- नवाचार को प्रोत्साहन मिलेगा ।
- जिले में शैक्षिक वातावरण का निर्माण होगा ।

कुल बजट :– 13816.00

योजना क्र. 01 से 14 तक कुल प्रस्तावित राशि 18,00,000.00

(अठारह लाख रूपए मात्र)

प्राचार्य
डाइट नगरी
जिला –धमतरी छ.ग.

कार्यालय प्राचार्य डाइट नगरी , जिला–धमतरी छ.ग.

क.केन्द्र. प्र.यो./2012–13/ नगरी दिनांक

प्रति,

संचालक
एस.सी.ई.आर.टी.
रायपुर (छ.ग.)

विषय :– केन्द्र प्रवर्तित योजना के अंतर्गत वार्षिक कार्य योजना प्रस्तुत करने विषयक ।

उपरोक्त विषय के तारतम्य में लेख है कि डाइट नगरी जिला धमतरी छ.ग. द्वारा केन्द्र प्रवर्तित योजना के अंतर्गत वार्षिक कार्य योजना का निर्माण कर सादर प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्राचार्य
डाइट नगरी
जिला –धमतरी छ.ग.

संलग्न :– वार्षिक कार्य योजना की 01 प्रति ।

डाइट नगरी जिला–धमतरी छ.ग.

वार्षिक कार्ययोजना की सूची

क.	योजना का नाम	प्रस्तावित राशि
01	श्रेष्ठ पालकत्व	689975.00
02	कम्प्यूटर शिक्षा को प्रभावी बनाना	186460.00
03	भाषायी (हिन्दी)दक्षता सुधार कार्यकम	157000.00
04	शोध एवं नवाचार का फिल्मांकन कर प्रशिक्षण हेतु दृश्य श्रव्य सामग्री तैयार करना	38550.00
05	परिचयात्मक /शैक्षिक भ्रमण (एक्सपोजर विजिट)	222500.00
06	गणित शिक्षण कार्यशाला (स्रोत व्यक्ति तैयार करना)	60175.00
07	किएटिव्ह साइंस अधिगम (स्रोत व्यक्ति तैयार करना)	51425.00
08	सामाजिक विज्ञान :नक्शा पठन कौशल (स्रोत व्यक्ति तैयार करना)	48420.00
09	स्वदेशी स्थानीय खेलों का शिक्षण में समावेश	75125.00
10	कौशल विकास :कला प्रशिक्षण	86200.00
11	एक्टिव्ह लर्निंग मेथ्डोलॉजी (प्रायोगिक कार्यशाला)	62700.00
12	कार्यानुभव+प्रोजेक्ट आधारित कार्यशाला	40090.00
13	प्रोग्राम ऑफ एक्शन कमेटी की मासिक बैठक	67500.00
14	सफलता की कहानी का संकलन एवं प्रकाशन	13816.00
योग		18,00,000.00

शब्दों में (अठारह लाख रूपए मात्र)

प्राचार्य

डाइट नगरी
जिला –धमतरी (छ.ग.)

केन्द्र प्रवर्तित योजना के अंतर्गत

वार्षिक कार्य योजना

सत्र 2012–13

प्राचार्य डाइट नगरी, जिला–धमतरी छ.ग.